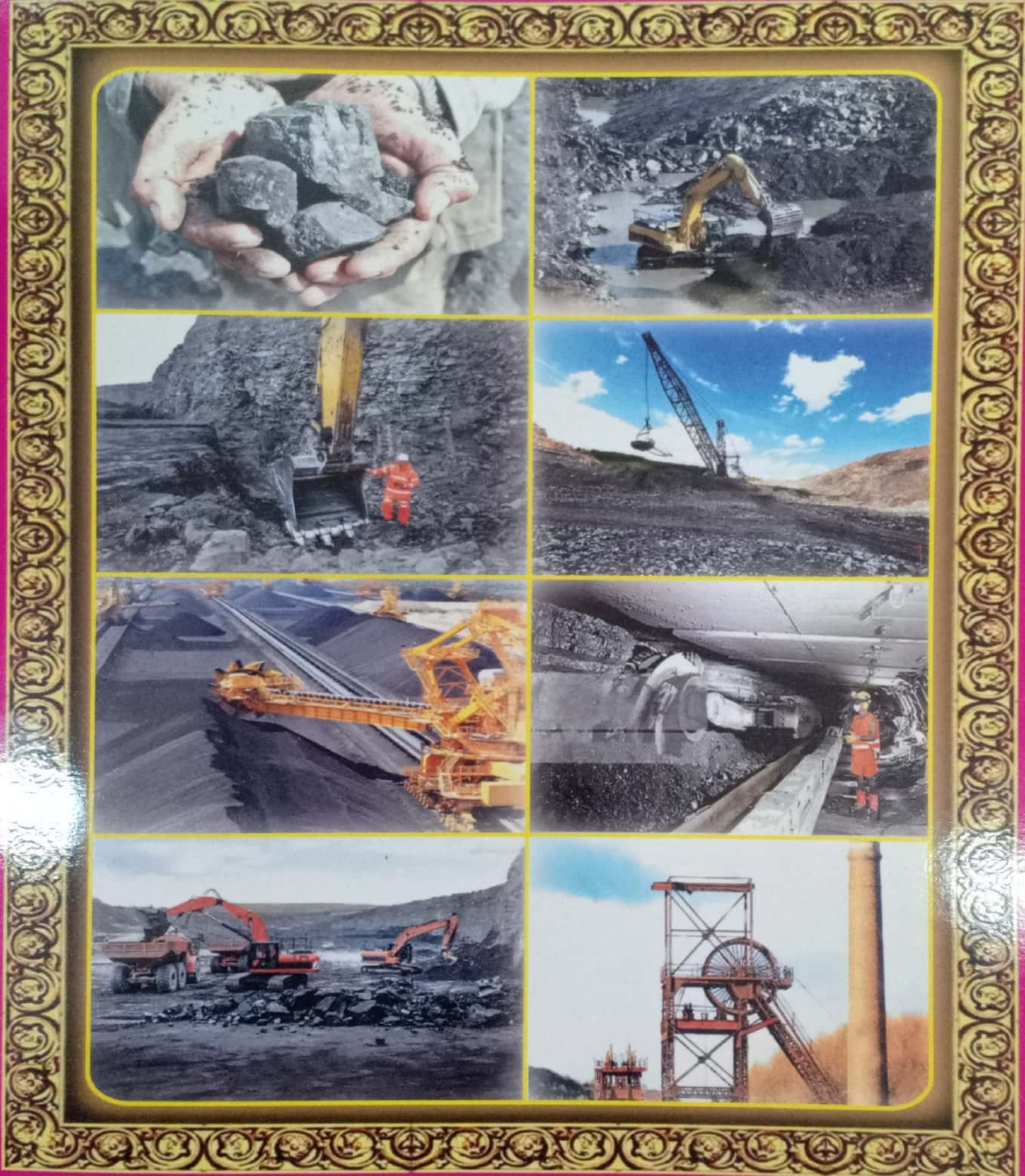




लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

(2019-20)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा
बोर्ड-II, पुराना निज़ाम महल (प्रथम तल), 234/4, ए.जे.सी.बोस. रोड, कोलकाता-700020





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

संदेश

वार्षिक पत्रिका

2019-20

तृतीय अंक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा
बोर्ड-II, पुराना निज़ाम महल (प्रथम तल), 234/4, ए.जे.सी.बोस. रोड, कोलकाता-700020



अनुक्रमणिका

स्वत्वाधिकार

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य ले.घ.बो.॥

प्रकाशन

'संदेश'

(वार्षिक पत्रिका)

प्रकाशक

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-॥

अंक: तीसरा (2019-20)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

भोसुमो राय भट्टाचार्य

महानिदेशक

संरक्षक

एम.वैकिटकृष्णन

उप-निदेशक (मुख्यालय)

प्रकाशन परामर्शदाता समिति एवं संपादक मंडल

संपादक

राजीव रंजन-हिन्दी अधिकारी

प्रबंध संपादक

सुधा तिवारी-वरिष्ठ अनुवादक

सहायक संपादक

संजीव सिंह-कनिष्ठ अनुवादक

रवि प्रभात-कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक:

अमिट ऑफसेट

7, वाटरलू स्ट्रीट, कोलकाता-700069

मोबाइल: 9339764686

मूल्य:

राजभाषा के प्रति निष्ठा

महानिदेशक का संदेश

03

उप निदेशक का संदेश

04

हिंदी अधिकारी संपादीय

05

जा मैं आँखिन देखिया.....पी.के.चक्रवर्ती

06

आज के भारत की नारी.....मौमिता दास

08

अबु सिम्बेल-एक अजुबा.....सुष्मिता विश्वास

09

माँ की ममता.....शांति दास

11

निराला: व्यक्तित्व और काव्य-शिल्प

का एकात्म.....सुधा तिवारी

12

सूखता भारत.....रवि प्रभात

14

क्या सोशल मीडिया हमें सचमुच

सामाजिक बनाता है.....राजीव रंजन

24

इस रात मैं लिख सकता हूँ बेहद

गमगीन अल्फाज.....सुधा तिवारी

27

दूसरी परम्परा के पुरोधा.....संजीव सिंह

28

सोशल मीडिया में फ़ेक न्यूज

का बढ़ता असर.....राय बहादुर सिंह

30

सोशल मीडिया में फ़ेक न्यूज

का बढ़ता असर.....गार्गी मंडल

31

पारिभाषिक शब्दावली

33

उद्घोषण : सभी रचनाकारों के विचार निजी हैं एवं कार्यालय/विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।



मौसुमी राय भट्टाचार्य
महानिदेशक



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कोलकाता

संरक्षक की कलम से.....

‘संदेश’ के तीसरे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। अपने शुरुआती दिनों में ही इस पत्रिका को प्रारंभिक पाठकों की तरफ से जिस प्रकार की स्नेहयुक्त प्रतिक्रिया मिली है, उसके लिए हम आभारी हैं। ध्यातव्य है कि संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में पूरा राजभाषा परिवार लगा रहता है और इस कार्य में कार्यालय के सभी सदस्यों से सौजन्यपरक सहयोग की अपेक्षा की जाती है। इस कार्य में कार्यालय के समस्त सदस्यों के बीच राजभाषा की पत्रिका एक रचनात्मक सेतु का कार्य करती है। अतः आप सबसे आशा एवं अपेक्षा बनी रहती है कि राजभाषा के प्रति वंछित सहयोग का भाव बनाए रखेंगे।

पत्रिका में अप्रतिम सहयोग के लिए रचनाकारों, सुधी पाठकों एवं नीति निर्देशकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए यह आशा करती हूँ कि संपादक-मण्डल इसी प्रकार पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए सजग एवं सक्रिय रहेगा।

मौसुमी राय भट्टाचार्य



एम.वेंकटकृष्णन
उप निदेशक/मुख्यालय



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कोलकाता

उप निदेशक की कलम से.....

‘संदेश’ का तृतीय अंक अपने रोचक लेखों, आकर्षक कलेवर और नूतन साज-सज्जा के साथ आपके समक्ष है। पिछले अंक को पाठकों द्वारा काफी सराहा गया है। आशा है कि यह अंक भी पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा। आशा करता हूँ कि इस पत्रिका की रचनाएँ, लेख एवं कवितायें इस कार्यालय के साथ-साथ अन्य कार्यालयों के कार्मिकों को भी अपने विचार संप्रेषित करने में प्रेरित और प्रोत्साहित करेगी।

संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी की पत्रिकाएं न सिर्फ राजभाषा हिन्दी के अनुपालन के संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करती हैं बल्कि ये कार्मिकों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं और उन्हें अपना विचार और चिंतन साझा करने का एक मंच भी प्रदान करती हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन और आकर्षक डिज़ाइन आदि के लिए संपादक मण्डल और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनायें।

एम.वेंकटकृष्णन



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कोलकाता



राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी

संपादकीय

‘संदेश’ की तृतीय प्रति पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के प्रकाशन में अपने कार्यालय के कर्मिकों को सदैव रचनाएँ लिखने और योगदान करते हुए जब पत्रिका पूर्ण रूप से प्रकाशित होती है, तो संपादक मण्डल के सदस्य अपने पूरे वर्ष के दौरान किए गए प्रयास को फलीभूत होते देखते हैं। संपादक मण्डल के सभी सदस्य पत्रिका की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर प्रगति करने हेतु प्रयासरत रहते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण योगदान इसमें कार्यालय के अन्य कर्मिक और अधिकारीगण ही दे सकते हैं क्योंकि उनकी रचनाओं, लेखों और कविताओं से ही पत्रिका में असली आकर्षण आता है।

उपर्युक्त संदर्भ में यह कहना बहुत ही प्रासंगिक है कि कार्यालय के बहुत सारे सदस्य इसमें काफी उत्साह दिखाते हैं। आशा है कि इसी तरह भविष्य में रचनाकारों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आने वाले वर्षों में अधिक से अधिक लोग अपनी कविताओं, निबंध, संस्मरण, अनुभव, चिंतन और यात्रा-वृत्तांत आदि के साथ पत्रिका परिवार को सहयोग देंगे और उनका उत्साह बढ़ाएँगे। पाठकों के मार्गदर्शन और आलोचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

राजीव रंजन

राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी



जा मैं आँखिन देखिया (संस्मरण)



पी.के.चक्रवर्ती
भूतपूर्व निदेशक
संस्मरण

ऑडिट ऑफिसर का प्रमोशन मुझे कलकते से शिलांग ए.जी.(ऑडिट) ऑफिस, शिलांग में बदली के रूप में मिला। मुझे पता था कि वहाँ दो साल बिताना होगा, इसलिए परिवार को यहीं छोड़कर मैं अकेला ही शिलांग निकल गया। वहाँ पर मैं एक होटल में रहने लगा क्योंकि कार्यालय के काम से अब्सर ही मुझे शिलांग से बाहर जाना होता था। इस कारण ही मैंने किराये का मकान या क्वार्टर नहीं लिया। हमारे इस होटल में एक साधु बाबा आए, वहाँ एक कमरा लेकर रहने लगे। बाबा का खाना होटल-मालिक के घर से आता था। शायद उनकी पत्नी अपने हाथों से खाना बनाकर भेजती थी। कुछ दिनों बाद मैंने देखा कि ऑफिस के कमरे में देवताओं की जितनी भी छवि लगी थीं, उन सब की पूजा-अर्चना का दायित्व बाबाजी को मिल गया। होटल-मालिक उन्हें भगवानजी कहकर संबोधित करते थे। रविवार को होटल में अतिथि बहुत कम होते थे, वहाँ रह जाते थे बस मेरे जैसे लोग जिनके घर बहुत दूर होते थे। ऐसे ही एक रविवार को सुबह-सुबह देखा कि ऑफिस के कमरे में एक बड़े आयोजन के साथ पूजा हो रही है। पूजा के उपरांत मालिक के बेटे ने हरेक कमरे में शांति-जल का छिड़काव किया, मैंने उससे पूछा कि-यह पूजा किसके लिए हुई है। बीस-बाइस वर्ष के उस नवयुवक ने बताया कि व्यवसाय में मंदी है, इसीलिए पूजा की गयी। इस प्रकार दिन बीतने के साथ भगवानजी पर मालिक की आस्था बढ़ती जा रही थी। उन्होंने भगवानजी को एक और कमरा दे दिया और उसमें बिस्तर के ऊपर भूत की मुखाकृति के साथ नारियल रखा गया। उसमें कुछ कुर्सियाँ, एक टेबल और एक आलमारी भी रखी गयी थी। कुछ दिनों के बाद उस कमरे के लिए अलग से टेलिफोन, फैक्स मशीन एवं डेस्कटॉप कंप्यूटर भी रखे दिखायी दिए। मैंने देखा कि दो महिलाएँ उस

कंप्यूटर पर सुबह नौ बजे से लेकर शाम के चार-साढ़े चार बजे तक कंप्यूटर पर कुछ काम करती रहती थीं। भगवानजी को जितना देखता था मेरा कौतूहल उतना ही बढ़ता जाता था। एकदिन अचानक ही मैं उनसे पूछ बैठा- 'आप किस जगह से शिलांग में आए हैं?' उन्होंने बताया कि दक्षिण भारत के किसी स्थान पर उन लोगों का आश्रम है, वहाँ से उनको शिलांग भेजा गया है एक स्कूल की स्थापना के लिए। स्कूल बनाने के बाद वह यहाँ से चले जाएँगे। मैंने उनसे नारियल के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यह नारियल ही उनकी विशिष्ट शक्तियों का उत्स है, जिसके बल पर वह किसी भी व्यक्ति का भाग्य बाँच सकते हैं। मैंने गौर किया कि इस होटल में आने के एक-दो माह बाद से ही लोगों की बड़ी भीड़ उनके पास अपना भाग्य जानने के लिए आने लगी थी। ये लोग शाम से ही आकर इंतजार में बैठे रहते, रात के लगभग दस बजे संन्यासी बाबा एक काले अंबेसडर (काँच भी जिसके काले ही थे) में गाड़ी से उतरते और होटल मालिक 'भगवानजी आता हूँ' कहते हुए दौड़कर दरवाजा खोल आते थे।

बाबाजी के दो वक्त का खाना, पीने का पानी वगैरह अब होटल के बाहर से आने लगा था। इस तरह बाबाजी/भगवानजी लगभग तीन महीने या इससे कुछ ज्यादा ही समय बीता चुके थे। अचानक एक दिन सुबह-सुबह देखा गया कि भगवानजी का घर खाली पड़ा है, वे वहाँ नहीं थे। होटल मालिक ने इन दोनों कमरों में ताला लगाकर छोड़ दिया। भक्त आते और बाबाजी के बारे में होटल-मालिक से पूछते तो उनका जवाब होता- 'भगवानजी आएँगे।'

इस होटल का स्थायी अतिथि होने के कारण मेरी सबसे अच्छी बातचीत थी। एक दिन बिहार से एक लड़का



आया और मुझसे पूछने लगा कि साधु बाबाजी कहाँ हैं? मैंने उत्तर दिया 'पंछी उड़ गया'। लड़का अवाक रह गया, उसने पूछा- 'ये कैसे हो सकता है।' बाबाजी ने मुझे स्कूल के लिए दीवार पर टांगने वाले नक्शे लाने के लिए कहा था और मैं 150 नक्शे लेकर आया हूँ। यह कहकर वह लड़का एकदम से बाहर चला गया और मैं ऑफिस के लिए चल पड़ा। शाम को ऑफिस से लौटने पर उस लड़के से फिर मुलाकात हुई। मैंने पूछा- 'बाबाजी की कुछ खबर मिली?' उसने बताया-खबर तो कुछ नहीं मिली, पर बाबाजी जिन-जिन जगहों पर जाते थे, वो मैं जानता था। उन जगहों पर जाकर पता किया और जो बात समझ में आयी वो ये कि - बाबाजी छः लाख रूपए कमाकर गये हैं यहाँ से।

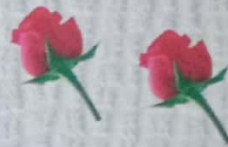
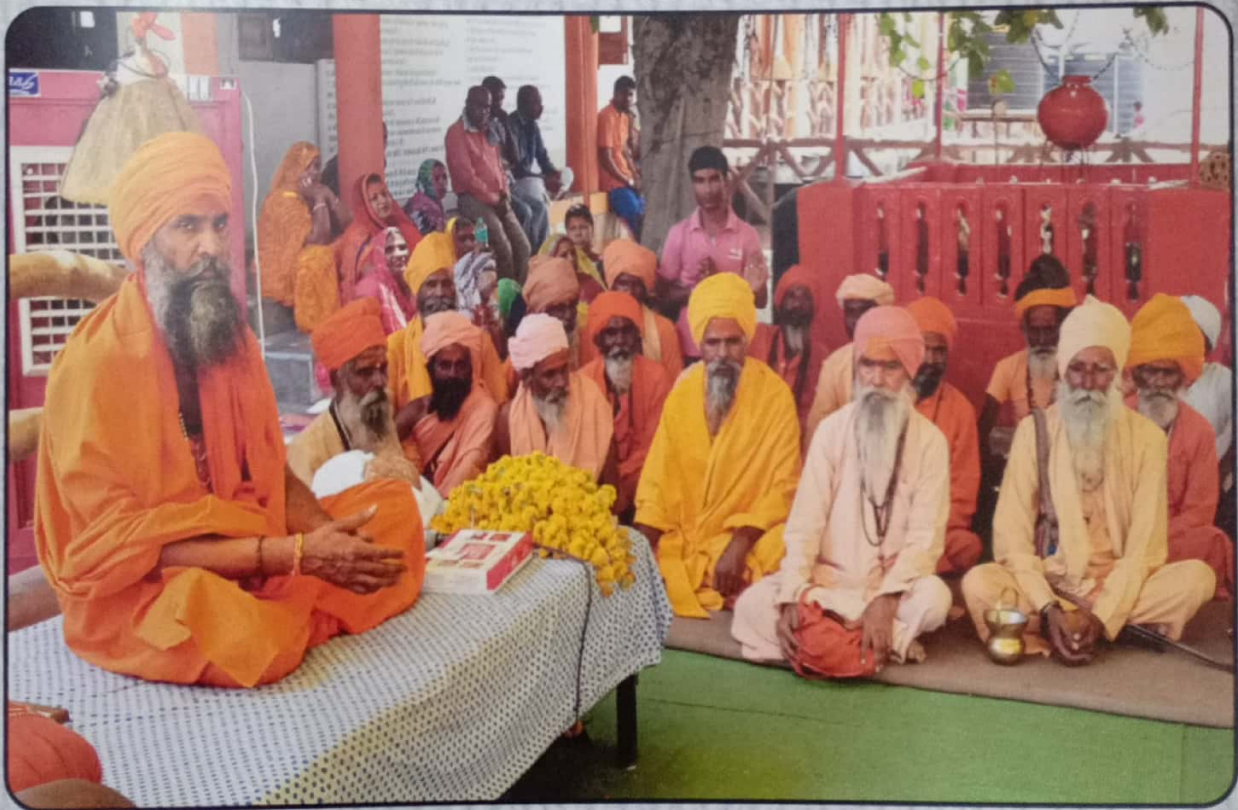
जैसे मैले दर्पण में सूरज का प्रतिबिंब नहीं पड़ता, वैसे मलिन अतःकरण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता। - **रामकृष्ण परमहंस**

जैसे छोटा-सा तिनका हवा का रुख बताता है, वैसे ही मामूली घटनाएं मनुष्य के हृदय की वृत्ति को बताती हैं।

- **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी**

चंद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है, परंतु अपना कलंक अपने ही पास रखता है।

- **रवीन्द्र नाथ ठाकुर**





आज के भारत की नारी

मौमिता दास,
लिपिक/सह टंकन

“नारी! तुम केवल श्रद्धाहो,
विश्वास रजत नभपगतलमें।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।।”

-जय शंकर प्रसाद

प्राचीन युग से ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है। हमारी धारणा रही है कि देवशक्तियाँ वहीं पर निवास करती हैं जहाँ पर समस्त नारी जाति को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

इन प्राचीन ग्रंथों का उक्त कथन आज भी उतनी ही महत्ता रखता है जितनी की इसकी महत्ता प्राचीन काल में थी। कोई भी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक वह नारी के प्रति भेदभाव, निरादर अथवा हीन भाव का त्याग नहीं करता है।

आज की नारी का सफर चुनौती भरा जरूर है, पर आज उसमें चुनौतियों से लड़ने का साहस आ गया है।

अपने आत्मविश्वास के बल पर आज वो दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना रही है। आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है।

परिवार व अपने करियर दोनों में तालमेल बैठाती नारी का कौशल वाकई काबिलेतारीफ है। किसी को शिकायत का मौका नहीं देने वाली नारी आज अपनी काबिलीयत व साहस के बूते पर कामयाबी के मुकाम तक पहुँची है।

आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है।

निस्संदेह नारी की वर्तमान दशा में निरंतर सुधार राष्ट्र की प्रगति का माप दंड है। वह दिन दूर नहीं जब नर-नारी, सभी के सम्मिलित प्रयास फलीभूत होंगे और हमारा देश विश्व के अन्य अग्रणी देशों में से एक होगा।





अबु सिम्बेल-एक अजुबा (यात्रा संस्मरण)

सुष्मिता विश्वास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अफ्रीका महादेश का एक रहस्यमय देश है मिस्र-आज का इजिप्ट। इसके कोने कोने में फैली है अलौकिक कहानियाँ। हजारों साल पुराने पिरामिड विभिन्न स्थापत्य की कहानियाँ सुन सुन कर बड़े हुए हैं हमलोग। कभी सोचा नहीं था कि अपनी आँखों से देखने का सौभाग्य मिलेगा। अपने साथ थीं सिर्फ बेहद इच्छायें। शायद इन ख्वाहिशों की वजह से मौका मिल गया उस रहस्यमय देश में जाने का। उस दिन अपने आपको दुनिया की सबसे सुखी इंसान महसूस कर रही थी। सन 2015 की एक सुनहरी शाम में मैंने यात्रा किया मेरे उस सपनों के देश की ओर।

नेताजी सुभाष अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से कतर की राजधानी दोहा होकर हम पहुँच गए मिस्र की राजधानी काएरो, पूरे शहर में छापी हुई है पुराने इतिहास की खुशबू, अब भी रह गये हैं कुछ हवेली-बाजार, जैसे 'अरेबियन नाइट्स' की किताबों में छपा देखा था।

मिस्र के मुख्य आकर्षण प्रसिद्ध पिरामिडों को छोड़ कर आज बातें करेंगे एक और स्थापत्य के बारे में। पूरे मिस्र देश में फैले हुए बहुत सारे नक्काशियों के बीच 'अबु सिम्बेल' की एक अलग ही पहचान है। राजधानी काएरो से 'अस्युत डेज़र्ट' (Asyut Desert) के बीच में से रास्ता गया है असवान शहर को, लगभग 855/856 किलोमीटर इसी रास्ते से जाना पड़ता है। हवाई जहाज से भी काएरो से असवान तक की दूरी तय की जा सकती है। पर सबसे आकर्षक है 'नील नदी' के उपर से आलीशान जहाज से जाना। हम भी ऐसे ही यात्रा किए थे।

नील नदी के उपर पाँच दिन के अत्यंत आकर्षक एक सफर, अलग अलग शहर में जहाज रोक के उस शहर को देखना, एक अलग सा अनुभव था। मिस्र की जान है नील नदी, इस के दोनो तटों पर कहीं कहीं आबादी की छवि

और कहीं दूर-दूर तक फैली हुई रेत। इस देश का दो तिहाई हिस्सा रेत ही रेत है। जिस भी शहर में जाते हैं उसके नस नस में इतिहास बातें करती है। राजधानी काएरो छोड़के दूसरे दिन हम पहुँचे 'असवान'। यहाँ से जाना होता है दक्षिण मिस्र और सूडान सीमा के करीब 'नुबिया गाँव'। इस गाँव में जाने के लिए, दिन में दो लश्कर जाते हैं सहारा मरुभूमि के बीच में से गुजर के लगभग 300 किलोमीटर दूर। एक दिन, सुबह चार बजे, लगभग 12-13 छोटी गाड़ियाँ और बस एक साथ चलती हैं। सुबह साढ़े तीन बजे हम सब जहाज के लाउंज पर इकट्ठा हुए। बस पहले से खड़ी थी। दूसरे जहाज और असवान के अलग अलग होटल से भी बस आई हुई थी। सब एक साथ मिल कर यात्रा शुरू हुई। सहारा मरु के बीच में से अबाधित 300 किलोमीटर रास्ता लगभग 3 घंटे में कैसे निकल गया पता ही नहीं चला। रास्ते में एक असाधारण प्राकृतिक दृश्य का साक्षी होने का सौभाग्य मिला। सहारा के बीच सूर्योदय, क्या जादुई दृश्य है। कहने लायक शब्द नहीं है। विशाल मरु के रेत रेत में जैसे सोने के टुकड़े बिखर रहे हों। उसकी रौशनी से जैसे आँखें चुंधिया रही थी। मरुभूमि की रूक्षता के बीच प्रकृति की अदभुत सृष्टि है 'मरुद्धान'। यहाँ पर नजर आए खजूर के पेड़ों से घिरा हुआ एक सरोवर। बीच बीच में एक दो छोटा छोटा घर खजूर के पत्तों से छाया हुआ। बचपन की कहानियों में जो पढ़ा था वही 'मरुद्धान'। मरुभूमि के पास झील नासेर के तट पर स्थापित है वही प्रसिद्ध 'नुबियान मनुमेन्ट', सन 1813 तक रेत के नीचे दबी हुई थी यह विशाल नक्काशी। स्वीडन के पुरातत्वविद 'जीन लुई बार्कहार्ड' (Jean Louis Burkhardt) पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रधान मंदिर के शीर्ष भाग को खोद कर निकाला। कहते हैं कि 'अबु सिम्बेल' नाम के एक स्थानीय लड़के



ने इस नक्काशी को ढूँढ निकालने में बहुत मदद की थी। इसलिए उसके नाम से ही यह मंदिर दुनिया में जाना जाता है। अभी यह युनेस्को के 'विश्व धरोहर' (UNESCO WORLD HERITAGE SITE) के अंतर्गत आता है।

यह नक्काशी इसापूर्व 13 वीं शताब्दी में 'कादेश' (KADESH) के युद्ध में जीत के स्मारक के रूप में फाराव द्वितीय रामेसिस ने बनवाया था। इसमें दो अलग-अलग मंदिर हैं। बड़ा मंदिर स्वयं फाराव के नाम से और छोटा वाला मंदिर उनकी पटरानी 'नेफारनारि' के नाम से बनाया गया था। पहाड़ों को तराशकर बनायी गयी 66 फीट ऊँची मूर्तियों को देखते हुए चक्कर आना स्वाभाविक है। मंदिर के बाहर और अंदर की दीवार पर 'हायारोग्लिफिक' चित्र लिपि में लिखी हुई है, देवताओं की कहानियाँ। देखते हुए रोंगटे खड़े हो जाते हैं। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेरे बचपन का सपना आज सच हो गया, अपने आँखों से ये परीकथा वाले देश को देख रही हूँ।

इस बारे में यह कहना जरूरी है कि बड़ा मंदिर सूर्य देवता 'आमुन रा' (AMUN RA) और 'रा होराखति' (RA HORAKTI) को समर्पित है। और यहां हैं अपराध जगत के देवता 'टाह' (PTAH), दूसरा मंदिर देवी 'हाथोर'

को समर्पित है।

अत्यंत निपुण और कारीगरी दक्षता से निर्मित मंदिरों की गठनशैली ऐसी है कि, साल में दो दिन -22 अप्रैल और 22 अक्तुबर को मंदिर शीर्ष के एक निर्दिष्ट गह्वर से सूर्य की पहली किरण सीधे आकर गिरती है गर्भगृह की इन मूर्तियों पर। केवल पाताल के देवता 'टाह' के उपर कोई रौशनी नहीं पड़ती। वह पूरे साल अंधेरे में ही रहता है। इस विस्मयकारी दृश्य को देखने के लिए हर साल 21 अप्रैल और 21 अक्तुबर की रात में विश्व भर से पर्यटक यहां पहुँचते हैं। यह सोच कर ही हम विस्मित रह जाते हैं कि हजारों साल पहले कौन सी तकनीकी दक्षता और गणितीय हिसाब से यह बनाया गया था। फाराव द्वितीय रामेसिस के समय की इस श्रेष्ठ नक्काशी का नवीकरण सन 1968 में किया गया था।

इतिहास के इस सम्मोहन में बंधे हम मिस्र की एक मात्र जल-विद्युत केन्द्र के पास पहुँच गये। यहां नील नद सच में ही गहरे नीले रंग का है।

ऐसी ही बहुत सारी ऐतिहासिक कहानियों से भरी नक्काशियों के नमूने मिस्र के कोने-कोने में फैले हुए हैं। उसके बारे में कभी और चर्चा करेंगे।





माँ की ममता

शांति दास
एम.टी.एस.

एक बंदरिया के पास दो बच्चे थे। उसका बड़ा बच्चा, सूरत से उतना अच्छा नहीं दिखता था, जितनी कि उसकी छोटी बहन चिट्टी दिखती थी। उसका बड़ा बच्चा सदा यही सोचता था कि उसकी माँ संभवतः उसकी छोटी बहन को अधिक चाहती है क्योंकि वह देखने में कुरूप दिखता है, पर ऐसा था नहीं। बंदरिया माँ तो दोनों को बहुत प्यार करती थी। एक दिन अचानक बहुत भयंकर तूफान आया। हवा-आँधी बहुत जोर-जोर से चल रही थी। चारों ओर पेड़ और उनकी शाखाएँ जोरों की आवाज़ के साथ गिर रही थीं। बंदरिया माँ बहुत भयभीत और चिंतित हो गई कि यदि वे उस स्थान से शीघ्र नहीं भागे, तो उसे और उसके दोनों बच्चों को चोट लग सकती है। अतः बंदरिया माँ ने अपने छोटे बच्चों को उठाकर सीने से लगाया और वहाँ से इतनी तेजी से दौड़ पड़ी जितनी तेज वह दौड़ सकती थी। बंदरिया माँ का बड़ा बच्चा चिट्टू भी बहुत अधिक डर गया था। वह जल्दी से कूदकर अपनी माँ की पीठ पर चिपकर कर बैठ गया। अब उसकी माँ एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदती हुई दौड़ रही थी। तभी अचानक एक पेड़ की डाल टूट गई और वे तीनों नीचे गिर पड़े। बड़ा बच्चा चिट्टू जो अपनी माँ की पीठ पर था, उसको बिल्कुल चोट नहीं आई, परंतु छोटा बच्चा जो अपनी माँ की गोद में था, उसे नीचे गिरने पर बहुत चोट लगी और उसको चोट लगने पर खून भी निकल रहा था। इस कारण बंदरिया माँ अपने छोटे बच्चे के लिए बहुत चिंतित हो गई थी। दूसरी ओर अपने चिट्टू को सुरक्षित देखकर बंदरिया माँ प्रसन्न थी। उसका बड़ा बच्चा-चिट्टू दौड़कर गया और कुछ बेरी और पत्ते लेकर आया, ताकि उसकी माँ उसकी छोटी बहन के घाव पर उसे लगा सके। बंदरिया माँ अपने बड़े बेटे चिट्टू को ऐसा करते देखकर बहुत प्रसन्न हुई और उसको अपने बच्चे पर बहुत गर्व हुआ। माँ ने अपने बेटे को धन्यवाद देते हुए





निराला: व्यक्तित्व और काव्य-शिल्प का एकात्म



सुधा तिवारी
वरिष्ठ अनुवादक

पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का रचना संसार कल्पना लोक से संचालित होने की बजाय जीवन-जगत के रंगों से अपनी तूलिका भरता रहा है। निराला के सुकुमार कवि हृदय का जीवन की कठोर धरातल से साक्षात्कार का प्रतिफल है उनकी काव्य-प्रतिमा। यही कारण है कि लयबद्ध, सुकुमार छंद एवं शब्द-विधान जब सरोकार की कसौटी पर असमर्थ दिखने लगे तो कवि ने मुक्त छंद की ओर रूख मोड़ दिया। निराला की कविता 'राजे ने अपनी रखवाली की' में शोषक और शोषित के संबंधों का सुंदर चित्रण किया गया है-

“राजे ने अपनी रखवाली की
किला बनाकर रहा
बड़ी-बड़ी फौजें रखीं।
चापलूस कितने सामंत आये
मतलब की लकड़ी पकड़े हुए
कितने ब्राह्मण आये
पोथियों में जनता को बाँधे हुए।
कवियों ने उसकी बहादुरी के गीत गाये,
लेखकों ने लेख लिखे,
ऐतिहासिकों ने इतिहास के पन्ने भरे,
नाट्य कलाकारों ने कितने नाटक रचे,
रंगमंच पर खेले।
जनता पर जादू चला राजे के समाज का
लोक नारियों के लिए रानियाँ आदर्श हुई।
धर्म का बढ़ावा रहा धोखे से भरा हुआ।
लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर
खून की नदी बही।
आँख कान मूंदकर जनता ने डुबकियाँ लीं
आँख खुली राजे ने अपनी रखवाली की।”

शोषक द्वारा इतिहास, कला, संस्कृति, धर्म एवं विधि के ताने-बाने से बुने गये साहित्य और विचार का इस्तेमाल किस प्रकार अवधारणा की निर्मिति में होता है, इस संबंध को उद्घाटित करने वाली यह सुंदर कविता है।

बंगाल और अवध की संस्कृतियों से द्विस्तरीय जुड़ाव ने उनके काव्य-शिल्प को गहरे प्रभावित किया। बंगाल के महिषादल की नौकरी में सुरक्षा का भाव तो मिलता था पर आत्मसम्मान दांव पर लगा रहता था, साथ ही रियासत की रियाया के शोषण और उनकी तकलीफों से उनका मन उचट जाया करता था। गढ़ाकोला (अवध) के गाँव में खेती और आर्थिक तंगी की समस्याएँ उन्हें तोड़ देती थी। जिम्मेदारियों के बोझ और प्रिय-जनों की असमय मृत्यु ने कवि को कभी आध्यात्म की ओर मोड़ा तो कभी विद्रोह भावना से भरकर क्रांतिकारी आंदोलन की ओर उन्मुख किया। साहित्य जगत में भी निराला के अक्खड़ व्यक्तित्व और खरी-खरी कहने की आदत ने विरोध और अस्वीकार को ही बढ़ावा दिया। रामविलास शर्मा ने 'निराला की साहित्य साधना: खंड-II' की भूमिका में एक मार्मिक टिप्पणी की है-

“निराला जब तक जीवित रहे, उनका विवेक-शून्य विरोध ही अधिक हुआ। उनकी मृत्यु के बाद उनका व्यक्तित्व श्रद्धा की फूलमालाओं के नीचे छिप गया।”

निराला का काव्य-वैविध्य अतुलनीय है। उन्हें मुक्त छंद का प्रणेता कहा जाता है परंतु 'तुलसीदास' काव्य में कठिन छंद और तुक-विधान को उन्होंने बेजोड़ तरीके से साधा है। उनके काव्य-विकास के साथ-साथ शब्द-विधान भी रूप परिवर्तित करता चलता है। अनामिका, 'परिमल' और 'गीतिका' से लेकर 'तुलसीदास' तक तत्सम-बहुला शब्दावली का समय रहा और फिर



‘कुकुरमुत्ता’, ‘अणिमा’, ‘बेला’ और ‘नये पत्ते’ में तद्भव की प्रचुरता दिखायी देती है। अपने काव्य-सृजन के उत्तर-काल में निराला एक सहज देसीपन के औदात्य में रम जाते हैं। ‘अर्चना’, ‘आराधना’ और ‘गीत गुंज’ के गीत उनकी ऐसी ही रचनाएं हैं। कवि की बहुमुखी प्रतिभा और अपनी ही कला से असंतुष्ट रहकर निरंतर उससे संघर्ष करते व्यक्तित्व और रचना-शिल्प पर सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है-

“काव्य-वैविध्य के लंबे दौर में निराला के यहां क्लासिकी, रोमांटिक तथा आधुनिक तत्व एक साथ दिखायी देते हैं। निराला में जैसे प्रसाद-निराला-अज्ञेय तीनों घुले-मिले हैं। मुक्त छंद और छंद-बद्ध, ‘राम की शक्तिपूजा’ और ‘कुकुरमुत्ता’, तत्सम-तद्भव-देसी; प्रबंध-गीत-मुक्तक विधान- काव्यभाषा और बंध के इन विविध स्तरों पर निराला समान क्षमता के साथ सक्रिय हैं। इस वैविध्य को साधने के कारण ही निराला बिना महाकाव्य लिखे महाकवि हैं, जिस रूप में परवर्ती दौर के एक अन्य शीर्ष कवि शमशेर बहादुर सिंह ने अपने पहले संग्रह में उनका स्तवन किया-

“भूलकर जब राह-जब-जब राह....भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि,
सधन तम की आँख बन मेरे लिए।”

पर इन विरूद्धों को साधते-साधते और भीषण गरीबी, दुर्दिन एवं अकेलेपन से जीर्ण यह कवि जीवन के अवसान में कुछ विक्षिप्त हो उठा था और उलटबांसियों का अभ्यस्त भी। ‘आराधना’ तक पहुँचते-पहुँचते कवि जीवन और साहित्य को एकाकार कर चुका था, जहाँ वो संसार में कविता को जीता था और कविता में ही शायद जीने लगा था।

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि-

“प्रयोगवाद और नयी कविता की रचना अवधि में उनकी मनः स्थिति का कुछ अनुमान उनके तब के जीवनीकार और मित्र गंगाप्रसाद पाण्डेय के एक संस्मरणात्मक लेख से लगता है। ‘नये पत्ते’ पत्रिका के जनवरी-फरवरी ’53 के अंक में प्रकाशित उस लेख का शीर्षक है ‘निरालाजी: आजकल’। लेख का समापन निरालाजी के

कुछ अंग्रेजी वाक्यों के साथ होता है-

I have combined the contribution in terms of literary art to the philosophy of living

(साहित्य के क्षेत्र में मेरा योगदान स्वयं जीने की पद्धति से एकाकार हो गया है।)

I am making an attempt of playing the same card in life and literature.

(जीवन और साहित्य के खेल में मेरे पत्ते एक ही हैं।)

चतुर्वेदी जी आगे लिखते हैं- इस अवधि में ‘आराधना’ के गीत लिखे जा रहे हैं; यह सूचना संस्मरणकार ने दी है। अर्थात् इस बिंदु पर पहुँचकर जीवन और रचना कवि के निकट एक हो चुके हैं, ‘लीला का सम्बरण-समय’ निकट आ रहा है। इधर नई कविता की अपनी मानसिकता पक रही है, जो पत्रिका रूप में 1951 में प्रकट होती है, ‘नये पत्ते’ जैसे उसका पूर्वाभास था।





सूखता भारत



रवि प्रभात
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

भारत में सूखे की समस्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। देश के कई हिस्सों से नदी और तालाब के सूखने की खबर दिल दहला रही है। देश के कई राज्य मसलन मध्य प्रदेश, बुंदेलखंड, राजस्थान आदि से सूखे की खबर देश की चिंता को बढ़ा रही है। भारत में राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, बिहार, तेलंगाना और झारखंड के कई हिस्सों पर यह खतरा मंडरा रहा है। राजस्थान के 33 जिलों में से 9, महाराष्ट्र के 37 जिलों में से 31, कर्नाटक के 30 जिलों में से 23, तेलंगाना के 33 में से 30, उत्तर प्रदेश के 75 में से 8, बिहार के 38 में से 24 तथा झारखंड के 24 में से 18 जिले सूखा प्रभावित है। ये संकटग्रस्त राज्य भारत की घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। इस प्रकार यह आकलन आसानी से किया जा सकता है कि देश की कितनी बड़ी जनसंख्या पानी की कमी से त्रस्त है। मानसून के आने से पहले यह सुखा इतना व्यापक है कि इससे पहले इतना व्यापक सुखा 65 साल पहले ही आया था।

सबसे खेदजनक तथ्य यह सामने आया है कि सूखे की चेतावनी इस साल अप्रैल महीने में ही आ गई थी परन्तु प्रशासन की तरफ से कोई समुचित व्यवस्था नहीं की गई। चक्रवात 'फनी' के समय ओडिशा राज्य ने तथा चक्रवात 'वायु' के समय गुजरात राज्य ने जैसी तैयारी की वैसी ही जरूरत सूखे से निपटने के लिए भी होनी चाहिए थी। लेकिन सूखा कोई चक्रवात जैसी समस्या तो नहीं जो बहुत कम आती है और चली जाती है। सूखा की समस्या भारत के घनी आबादी वाले सभी राज्य झेलते आ रहे हैं परन्तु इस समस्या की आदत इन राज्य के सरकारों को हो गई है। इसलिए सूखे की आदत इन राज्यों को पड़ जाने के कारण ये राज्य चेतावनी मिलने के बाद भी सूखे की समस्या को निपटाने के लिए सक्रिय नहीं हुए।

सूखे से त्रस्त इलाकों से यह पता चल रहा है कि प्रशासन ने तैयारी नहीं की थी। पशुओं के लिए चारे का इंतजाम न होने से उसका भाव अनाज के भाव के बराबर पहुँचने लगा था। राजस्थान और गुजरात जैसे पारम्परिक पशुपालक इलाकों में पशुओं का अकाल से मरना लोगों की कमर तोड़ देता है। प्रशासन ने सूखा क्षेत्रों में टैंकर की व्यवस्था की लेकिन बिजली न होने के कारण टैंकर से पानी नहीं आता है। अगर पीने का पानी टैंकर से पहुँचता है तो अगले ही दिन दूसरे टैंकर का इंतजार भी होने लगता है क्योंकि टैंकर एक दिन में ही जवाब दे देता है। असल में प्रशासन कभी भी योजना व्यवस्था नहीं करता है। सूखे जैसी गंभीर समस्या को लेकर भी बस खानापूर्ति का ही प्रशासनिक रस्म अदा होती है। ऐसे में भला सूखे के कारण उपजी समस्या कैसे समाप्त होगी।

एक रिपोर्ट ने पानी की कमी के तथ्य को राज्य में कैसे विकराल समस्याएँ उत्पन्न होगी का उदाहरण देते हुए कहा है कि 2020 तक भारत के 21 शहरों के भूजल संसाधन खत्म हो जाने की आशंका है। 2030 तक देश में पानी की मांग दोगुनी हो जाएगी और लाखों लोग पानी की कमी से जूझेंगे। अभी तो करोड़ों लोग पानी की कमी को झेल रहे हैं जिसमें और इजाफा इन लाखों लोगों के जुड़ जाने से होगा। कहा जा रहा है कि राजस्थान से 1.5 करोड़, महाराष्ट्र से 4 करोड़, कर्नाटक से भी 4 करोड़ तथा उत्तर प्रदेश से 5 करोड़ लोगों की वर्तमान में पानी की कमी से जीवन संकट में है।

पानी की ये त्रासदी यूँ ही अचानक नहीं आई है। भारत की बढ़ती जनसंख्या ने सीमित जल के साधनों पर काफी दबाव डाला है। इन्हीं जल संसाधनों से खेती-बाड़ी होती है। कृषि के सारे काम होते हैं। पशुपालन का कार्य भी जल संसाधनों पर निर्भर है। परन्तु बढ़ती जनसंख्या के मांग



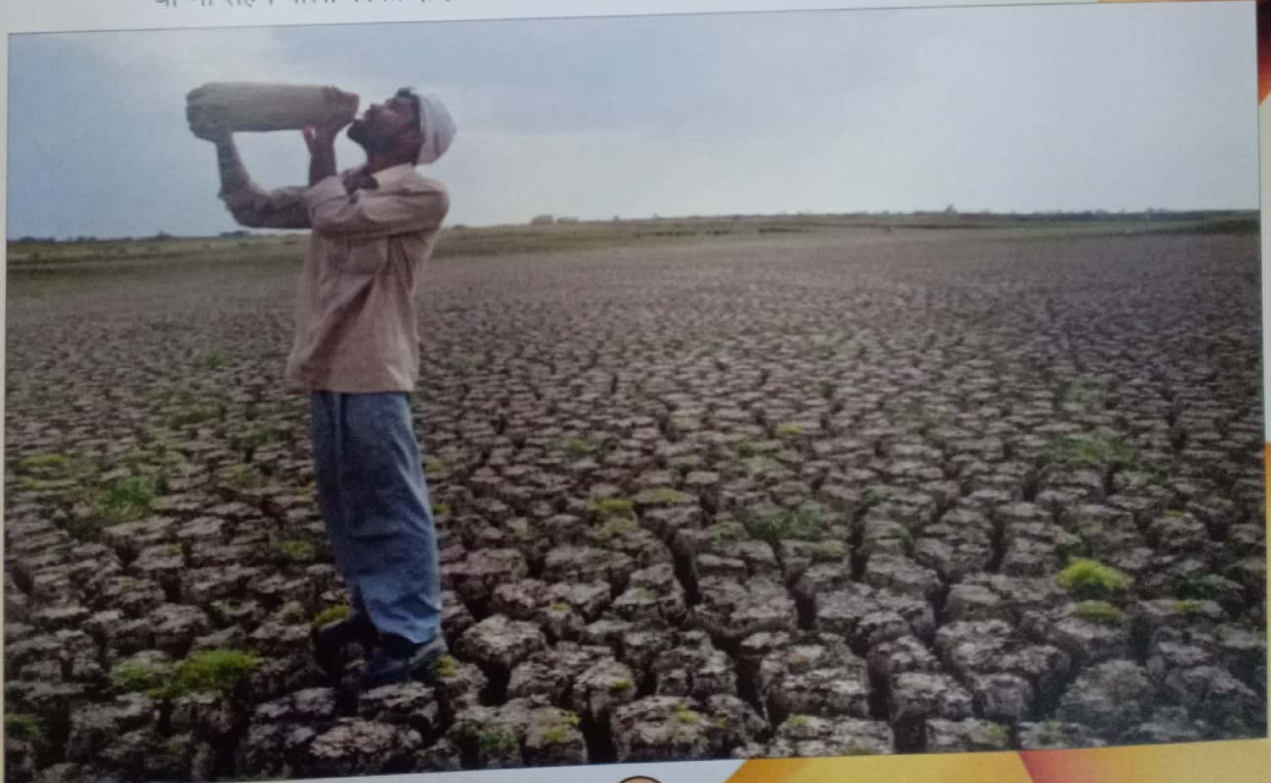
के आगे जल संसाधन कम पड़ता जा रहा है। तिस पर औद्योगिक कचड़ा भी नदी के जल को प्रदूषित कर रहा है। जिससे जल की समस्या और गहरी हो जाती है।

भारत में वर्षा का जल का संचयन जड़ नहीं पकड़ा है। रेनवाटर हार्वेस्टिंग बहुत ही प्रभावशाली और लाभदायक उपाय है वर्षा के जल को इकट्ठा करने का। परन्तु इस प्रणाली के प्रचार प्रसार के अभाव में यह भारतीय समाज में घर नहीं कर पाई है। बांध निर्माण, नदी जोड़ो परियोजना और कैचमेंट एरिया ऐसे प्रबल और सार्थक उपाय है जो सूखे की समस्या को दूर करने में पूरी तरह सक्षम है। इसके अलावा औद्योगिक कचरे के निष्कासन के लिए अन्य विकल्प तलाशने की आवश्यकता है और प्रदूषित हो चुके नदी के जल को साफ करने की आवश्यकता है।

इन सारे उपायों को अब समयबद्ध तरीके से लागू करने की आवश्यकता आ गई है। अन्यथा हम इसी तरह हर साल पानी की कमी से कई जिंदगियों के बुझ जाने का विध्वंशक दृश्य देखते रहेंगे। इसलिए ऐसा न हो जैसा कि गुलज़ार ने इन पक्तियों में लिखा है कि-

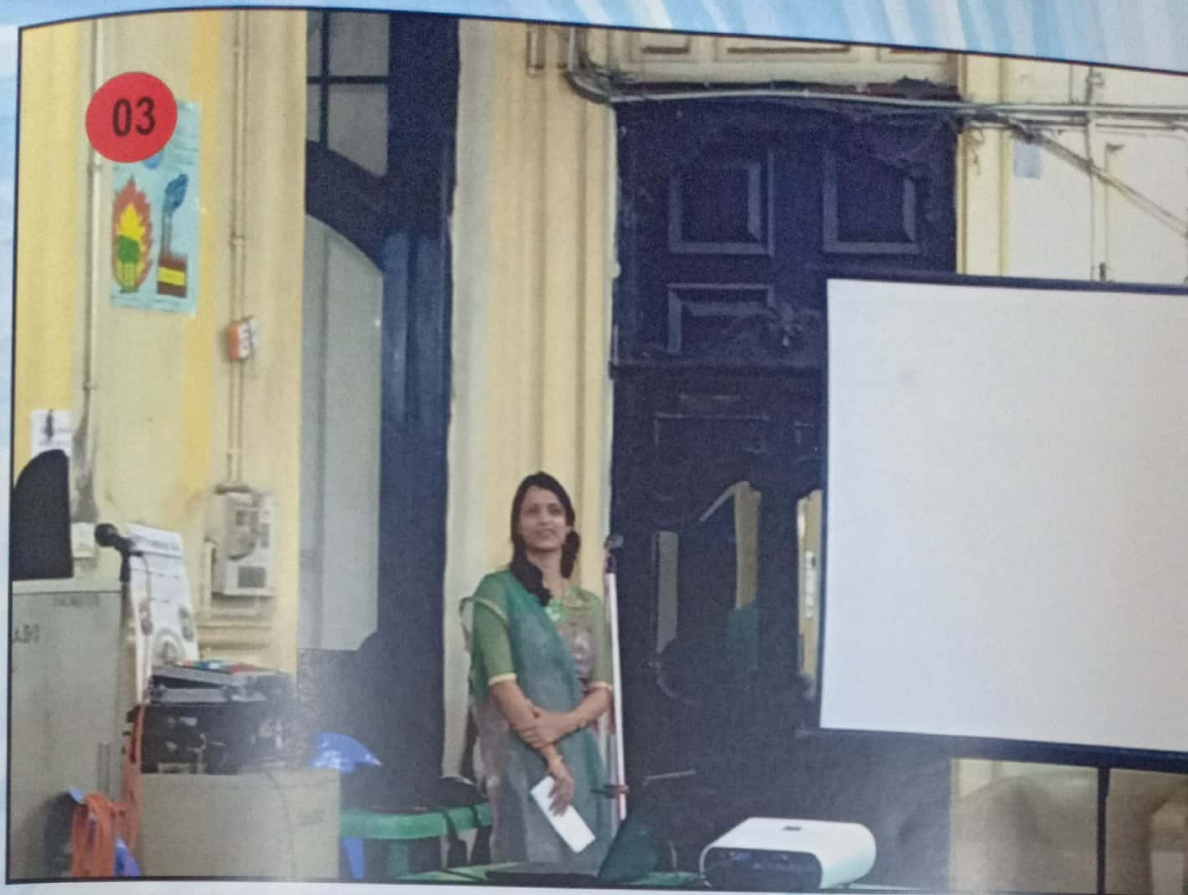
दर्द की अपनी भी एक अदा है.....

वो भी सहने वालों पर फ़िदा है.....



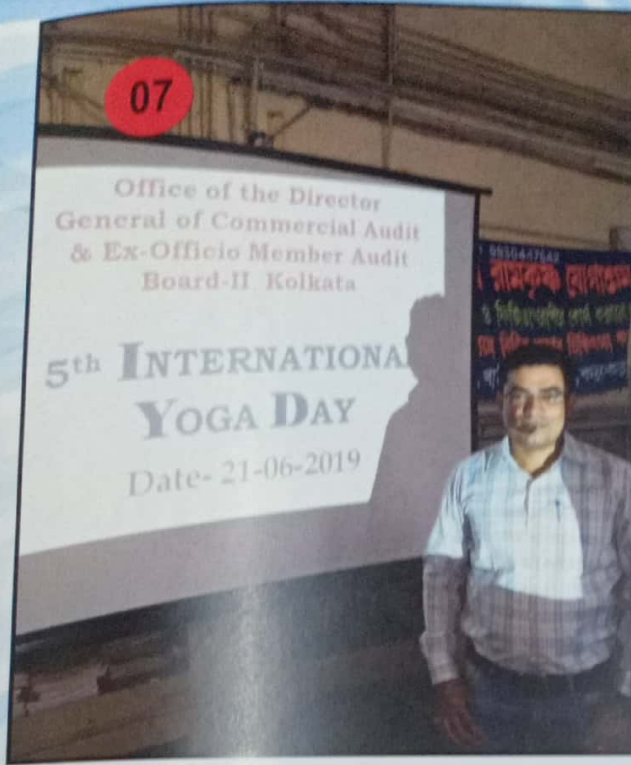
हिंदी पखवाड़ा (2019) के दौरान कार्मिकों की प्रस्तुति (छवि सं. 1-2-3-4)





बेहाला रामकृष्ण योगाश्रम द्वारा कार्यालय में आयोजित
योगाधारा कार्यक्रम (छवि सं. 5-6-7)





কোল অডিট রিক্রিয়েশন ক্লাব দ্বারা আয়োজিত পণ্ডিত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর
কী 200 বী নন্মশতী কার্যক্রম (ছবি সঁ. 8-9-10)





09

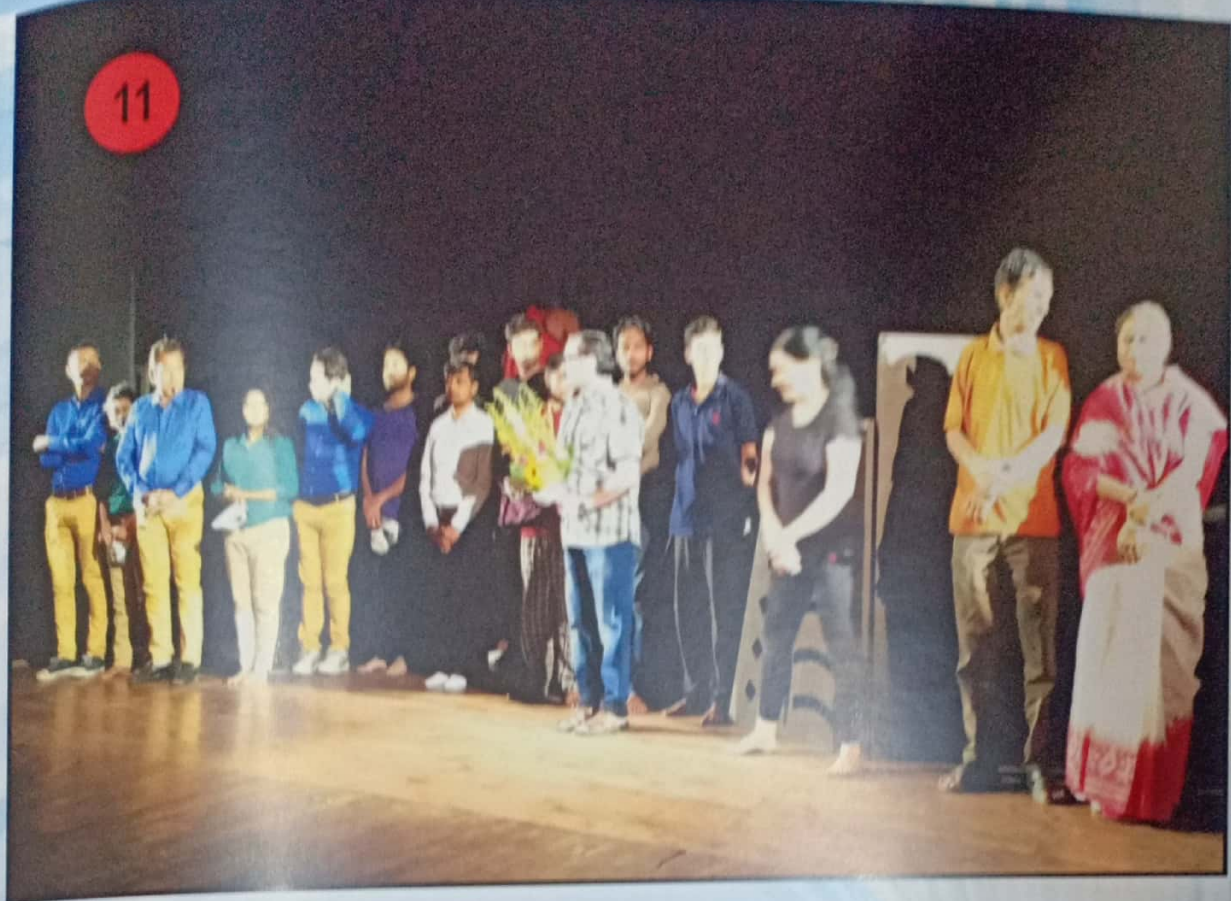
महानिदेशक महोदया
कार्यालय के सदस्यों को
संबोधित करते हुए



10

20

कोल ऑडिट रिक्रिएशन क्लब द्वारा आयोजित वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति व कागिकगण (छवि सं. 11-12)



भूतपूर्व निदेशक श्री पी.के.नस्कर के विदाई
कार्यक्रम की छवियाँ (छवि सं. 13-14)



श्री अमल चक्रवर्ती, व.लेखापरीक्षक के विदाई कार्यक्रम (छवि सं.15)



कार्यालय द्वारा आयोजित पिकनिक का आनंद लेते कार्मिकगण (छवि सं. 16)





क्या सोशल मीडिया हमें सचमुच सामाजिक बनाता है

राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी

इंटरनेट और सोशल मीडिया का आविष्कार एक क्रांति की तरह है। सूचना और ज्ञान को साझा करने, संपर्क बनाने और सामाजिक सम्बन्धों को निभाने में इससे काफी सुविधा मिलती है। अगर परिवार के सदस्य भी दूर रहते हों तो इस माध्यम का प्रयोग कर संपर्क स्थापित करने से निकटता का आभास होता है। सामाजिक संपर्क और सरोकारों के अलावा, इसके सही प्रयोग से ज्ञान की प्राप्ति और वृद्धि भी होती है। साथ ही, यह मनोरंजन का भी एक बहुत ही अच्छा साधन है। कोई भी नई चीज और वैज्ञानिक आविष्कार मनुष्य में उत्सुकता और कौतूहल उत्पन्न करता है। मनुष्य उसका उपयोग करने एवं उसका लाभ उठाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। इंटरनेट का आविष्कार और उसके प्रयोग ने हमें काफी सुविधा प्रदान की है किन्तु इसकी अनेक हानियाँ भी हैं।

जब हम इसके नकारात्मक पहलू पर विचार करते हैं तो कुछ सीमित बिन्दुओं पर ही विचार करते हैं। अभी तक सोशल मीडिया को समय की बर्बादी करनेवाला, भ्रामक सूचनाएँ फैलाने वाला, अफवाहें फैलाकर सामाजिक वैमनस्यता की स्थिति उत्पन्न करने वाला तथा निजता और गोपनीयता में अनावश्यक हस्तक्षेप और दखलंदाजी करने वाला ही माना जाता रहा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सोशल मीडिया का अत्यधिक एवं अनावश्यक प्रयोग हमें आत्मकेंद्रित और आत्ममुग्ध बनाने के साथ-साथ असामाजिक भी बना देने की सीमा तक जा सकता है।

किसी भी मनुष्य को सामाजिक संपर्क से वंचित कर के एकांत कारावास या परिरोध में रखना यातना का एक प्रकार माना जाता है। साथ ही यह भी सर्वमान्य सत्य है कि अत्यधिक या आवश्यकता से अधिक सामाजिक संपर्क एवं बातचीत भी अच्छा नहीं है और इसके अनेक

दुष्परिणाम सामने आते हैं। मनुष्य को समाज की भी आवश्यकता है और उसे उतनी ही आवश्यकता निजता और गोपनीयता की भी है। यह सुनने में स्पष्ट रूप से विरोधाभासी लगता है। किन्तु इसकी सत्यता से इनकार नहीं किया जा सकता है।

ऑनलाइन बातचीत और वास्तविक जीवन के बातचीत के बीच एक सीमारेखा खींची जानी आवश्यक है। संपर्क का प्रथम माध्यम सिर्फ आभासी और बहुत हद तक समय की बर्बादी करने वाला है। विगत कुछ वर्षों में विज्ञान के इस अद्भुत आविष्कार ने हमें सुविधा और आनंद तो बहुत प्रदान की है किन्तु वास्तविक जीवन के सामाजिक और पारिवारिक सरोकारों एवं सम्बन्धों को वास्तविक कम और आभासी अधिक बना दिया है। सोशल मीडिया पर लोगों के क्रिया-कलाप और उनकी गतिविधियाँ समाज के अन्य लोगों के प्रति हमारे व्यवहार और उठाए गए कदमों को भी अब प्रभावित करने लगे हैं। सोशल मीडिया पर हमारे अभिव्यक्ति और विचार पारस्परिक सम्बन्धों पर महत्वपूर्ण और बहुत प्रभाव डालने की क्षमता रखते हैं और डालते भी हैं। यूँ तो दोनों प्रकार के सामाजिक बातचीत - आभासी एवं वास्तविक हमारे सोच, विचार, चिंतन, विचारधारा, अनुभूति, संज्ञान, बोध ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान और सूक्ष्म चिंतन को प्रभावित करते हैं। आदिम मानव भी सामाजिक प्राणी था और समाज के ताने-बाने में उसके कई निजी हित सुरक्षित रहा करते थे। ये तर्क सोशल मीडिया के प्रयोग के पक्ष में भी दिये जाते हैं। हमारे सामाजिक बातचीत हमारे पहचान के एक बहुत ही मुख्य घटक हैं। इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया के सामाजिक संसर्ग की एक सीमा है।

सोशल मीडिया पर एक जैसे लोग आसानी से समूह बना सकते हैं। इसके उपरांत, लोग जो विचार व्यक्त



करते हैं और जैसे विचार साझा करते हैं उनपर उनके समान विचार वाले व्यक्ति भी अपनी स्वीकृति और सहमति व्यक्त करते हैं। इस आभासी दुनिया के छोटे से समूह में एक ही प्रकार के विचार और चिंतन प्रतिध्वनित होते रहते हैं। एक व्यक्ति उन्हीं प्रतिध्वनित विचारों को ही संसार की सच्चाई और वास्तविकता मानने लगता है। वास्तविक जीवन के अनेक कड़वे सत्य उसे नहीं दीखते हैं। वास्तविक और आभासी जीवन में भी व्यक्ति सिर्फ अपने जैसे विचार सुनने का आदि हो जाता है। जब कभी उसे विपरीत और विरोधी विचार और चिंतन का सामना करना पड़े तो वह उसे स्वीकार कर पाने की स्थिति में नहीं रहता और असहिष्णु हो जाता है। यहाँ असहिष्णु का अर्थ वह नहीं है जो विगत कुछ दिनों से राजनैतिक वाद-विवाद में व्यवहार में लाया जा रहा है। यहाँ असहिष्णु का अर्थ सिर्फ वस्तुपरक रूप में यह लगाया जाना चाहिए कि अपने सूक्ष्म जगत की मान्यताओं और चिंतन के विरोधी, असहमतिपूर्ण और मतभेद वाले विचारों को हमारे द्वारा बिलकुल नकार देना ही असहिष्णुता है। वास्तविक जीवन के संसर्ग में परस्पर-विरोधी बातें एक बार सुनने को मिलती हैं और व्यक्ति की स्मरणशक्ति पर यह निर्भर है कि उसकी प्रतिध्वनि उसे कब तक सुनाई पड़ेगी। किन्तु सोशल मीडिया में उसे उन्हें पढ़ने और सुनने को कई बार सामना करना पड़ता है। असहमति पूर्ण विचारों को सिर्फ नकारा ही नहीं जाता है। बल्कि वैसे विचार रखने वाले लोगों के प्रति मन में कटुता भी आ सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारा मस्तिष्क बाहरी ज्ञान, सूचना और अन्य उद्दीपनों को उसी रूप में लेता है जिसमें हम अपने को सहज और सुविधाजनक स्थिति में पाते हैं।

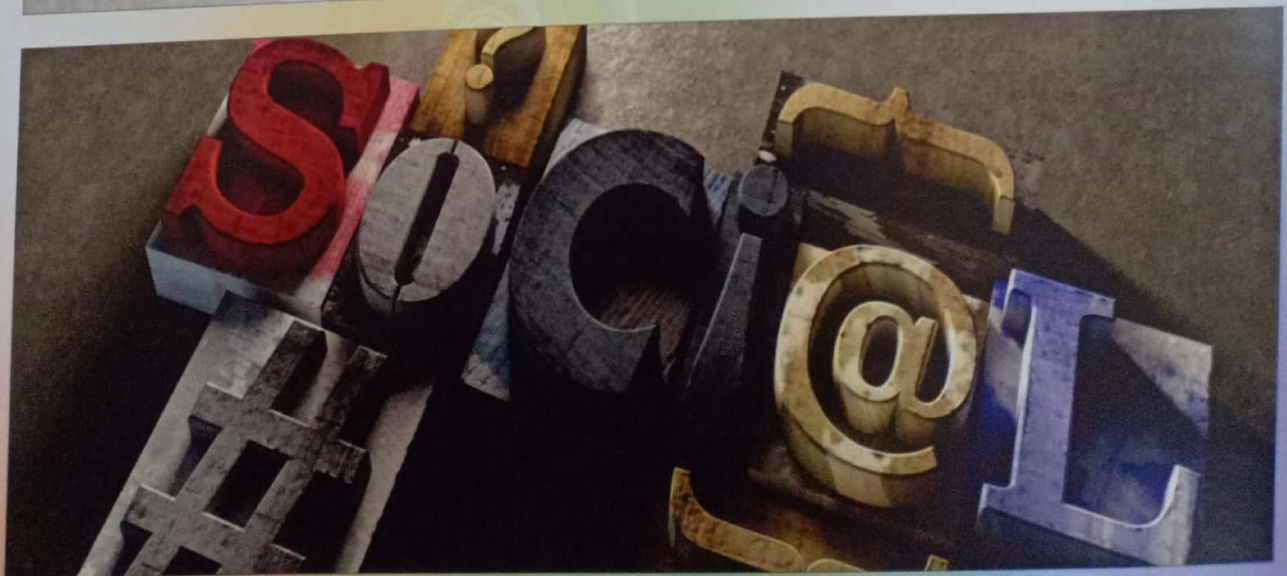
सोशल मीडिया की लत एक मानसिक विकार का रूप ले चुका है। यह हमारे संसर्गशील होने के भ्रम को बढ़ाता है। वास्तविक जीवन में हम उतने लोकप्रिय और सनसर्गशील नहीं होते हैं जितना हम इंटरनेट के माध्यमों पर दिखते हैं। सोशल मीडिया में अधिक लोकप्रिय होने का मतलब यह नहीं है कि हम अधिक सामाजिक हैं। हमारी छवि और लेखों पर अधिक लाइक और कमेंट्स आने का भी यह मतलब नहीं है कि हम बहुत सामाजिक हैं और वास्तविक जीवन में उतने ही लोकप्रिय हैं। सोशल मीडिया पर हमारे छवियों और विचारों पर लाइक और कमेंट्स में जो आनंद की अनुभूति होती है वह क्षणिक ही होता है।

वास्तविक जीवन के संसर्ग और बातचीत हमें वास्तविक और दीर्घकालिक आनंद प्रदान करते हैं। वास्तविक आनंद से हमारे मस्तिष्क में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन निकलता है जिससे हमें आनंद की अनुभूति होती है। सोशल मीडिया के आनंद की तुलना दवा के प्रयोग और प्रभाव से उत्पन्न किए गए ऑक्सीटोसिन की तरह है। इस प्रकार के ऑनलाइन आनंद लेना बहुत ही आसान है। किन्तु वास्तविक जीवन में इस प्रकार के आनंद लेने के लिए हमें बहुत से मानदंडों पर खरे उतरने की आवश्यकता है और एक सार्थक प्रयास की आवश्यकता है। सोशल मीडिया पर हम सिर्फ अपनी अच्छी और सुंदर छवियाँ ही डालते हैं। हमारे लेखन पर कोई गलत टिप्पणी है तो उसे हम मिटा सकते हैं। हमारे पास काफी समय होता है जिससे हम अपने विचार और कमेंट्स सोच-समझकर साझा कर सकते हैं। किसी के पूछे गए प्रश्न का उत्तर हम अपनी सुविधा से, सोच-समझकर और अपने द्वारा तय किए गए समय पर दे सकते हैं। वास्तविक जीवन के संसर्ग और संपर्क में हमारे पास इतना समय और सुविधा नहीं होते। हमेशा हम अपनी सकारात्मक छवि और इमेज बाहरी दुनिया में अभिव्यंजित कर देने में सफल हो जाते हैं। अपने व्यक्तित्व के नकारात्मक पहलुओं को बाहर आने से हमें रोकने का विकल्प रहता है।

सोशल मीडिया की लत किस प्रकार हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रहा है यह सोचने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह एक मनोरोग और विकार का रूप ले चुका है। जब कभी हम परिवार के सदस्यों अथवा मित्रों के बीच बैठ कर समय व्यतीत करते हैं तब हमारे अंदर मोबाइल फोन खोल कर सोशल मीडिया खोल कर देखने की प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति शिष्टाचार के विरुद्ध तो है ही साथ ही यह हमें वास्तविक जीवन में कम सामाजिक बनाती है। हमारे मित्र जो हमारे साथ और सामने बैठे हैं उनसे संपर्क और वार्तालाप करना भी अति आवश्यक है और समाजिकता का एक अभिन्न अंग है। हमारा यह व्यवहार हमारे मित्रों को उस समय असामाजिक लग सकता है। परिवार के सदस्यों को जो हमें समय देना है उसमें कमी हमारी पारिवारिक उत्तरदायित्व के निर्वहन में बाधा उत्पन्न करती है। सोशल साइट्स पर बार-बार अपनी सेल्फियाँ और फोटो डालना आत्म-मुग्धता और मनोविकार



का लक्षण हो सकता है। किसी भी प्रकार के मनोविकार और मनोरोग अच्छे नहीं होते और उनका चिकित्सा के द्वारा निदान करने की आवश्यकता हो सकती है। सोशल मीडिया पर व्यतीत किया गया समय हमें हमारे वास्तविक कार्य और उत्तरदायित्व से दूर करता है। हम सभी के पास एक दिन में सिर्फ 24 घंटे और एक वर्ष में सिर्फ 365 दिन ही होते हैं। हम इनका सदुपयोग कितना वास्तविक जीवन में और कितना समय आभासी जीवन में करते हैं यह पूरी तरह हम पर निर्भर करता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम आभासी जीवन में नहीं बल्कि वास्तविक जीवम में सामाजिक बने।





इस रात मैं लिख सकता हूँ बेहद गमगीन अल्फ्राज

पाब्लो नेरूदा
अंग्रेजी से अनुवाद-सुधा तिवारी

इस रात मैं लिख सकता हूँ बेहद गमगीन अल्फ्राज
लिख सकता हूँ, मसलन, 'तारों भरी रात है और
तारे नीले पड़े हुए हैं दूर कहीं ठिठुरते हुए'

रात की हवा आकाश में मंडरा रही है गुनगुनाते हुए

इस रात मैं लिख सकता हूँ बेहद गमगीन अल्फ्राज
मैं उसे प्यार करता था और कभी-कभी वह भी मुझसे
करती थी प्यार

इन्हीं रातों में मैं उसे अपनी बाहों में समेट लेता था
उसे चूमता चला जाता था निस्सीम आसमान तले

वो मुझे प्यार करती थी, कभी-कभी मैं भी
उसे करता था प्यार
उसकी पूरसकून आँखों को कौन नहीं चाहेगा

इस रात मैं लिख सकता हूँ बेहद गमगीन अल्फ्राज
यह सोचते हुए कि वह मेरे पास नहीं है, कि
मैंने उसे खो दिया है

इस लंबी रात को सुनने के लिए, जो उसके
बिना और भी लंबी है
और गीत झरते हैं आत्मा में ज्यों घास पर टपकती है ओस

इससे क्या कि मेरा प्यार उसे बाँध नहीं पाया
रात तारों भरी है और वो मेरे पास नहीं

इतना ही बस, दूर कहीं कोई गा रहा है, बहुत दूर
मेरा जी नहीं ठहरता कि मैंने उसे खो दिया है

मेरी नजरें उसे ढूँढती हैं गोया उसे करीब लाने को
मेरा दिल उसे ढूँढता है और वह मेरे पास नहीं

वही रात है जो रोशन किये है उन्हीं दरख्तों को
हम, जो तब थे, अब उस तरह नहीं रहे

मैं अब उसे नहीं चाहता, बेशक, पर क्या
दिलकश प्यार था

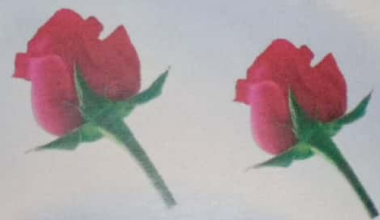
मेरी आवाज़ हवा को तलाश रही थी उसके
सुनने को छू भर पाने को

किसी और की, वह किसी और की हो जाएगी,
जैसी कि थी वह मेरे बोसों के पहले
उसकी आवाज़, चमकती देह उसकी निस्सीम आँखें

मैं अब उसे नहीं चाहता, बेशक, पर प्यार रह गया शायद
प्यार का समय कितना कम है और भूलना कितना लंबा

क्योंकि इन्हीं रातों में मैं उसे अपनी बाहों में समेट लेता था
मेरा जी नहीं ठहरता कि मैंने उसे खो दिया है

गोया यह आखिरी दर्द है जो मुझे उससे मिला
और यह आखिरी कविता जो उसके नाम है।





दूसरी परम्परा के पुरोधा



संजीव सिंह
क.हि.अ.

डॉ. नामवर सिंह नहीं रहे। वे हिंदी के उन चंद व्यक्तित्वों में थे जिनके पास न सिर्फ हिंदी, बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य की एक विहंगम और समग्र दृष्टि थी और इसलिए दूसरी भाषाओं में हिंदी के जिस व्यक्ति को सबसे पहले याद किया जाता रहा, वे नामवर सिंह ही हैं।

नामवर जी सही अर्थों में पूर्णकाम थे। उन्होंने समूचे समाज को अपना परिवार माना था और अचेत होने से ठीक पहले तक उसी विस्तृत परिवार के कल्याण हेतु सक्रिय और प्रतिबद्ध रहे। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ने 'उर्वशी' में पुरुषा के लिए जो कहा था, वह नामवर जी के लिए भी कहा जा सकता है -

मर्त्य मानव की विजय का तुर्य हूँ मैं
उर्वशी अपने समय का सूर्य हूँ मैं।

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं कि - "निःसंदेह नामवर जी हमारे समय के सूर्य थे। वे एक ऐसे सूर्य थे जो किसी ग्रहण से कभी भयभीत नहीं हुआ। उसकी गरीबी भी ऐसी गर्वीली थी कि अब नई पीढ़ी को शायद यकीन न आए। क्या कोई इस कदर भी स्वाभिमानी हो सकता है! लेकिन नामवर जी तो ऐसे ही थे। वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने नामवर सिंह को देखा है। वे और भाग्यशाली हैं जिन्होंने उन्हें सुना है लेकिन उनके भाग्य का क्या कहना जिन्होंने उनसे पढ़ा है और उनकी छाँव में खुद को गढ़ा है।"

अध्यापन

नामवर जी ने अध्यापन की एक लंबी यात्रा संपन्न की थी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय, जोधपुर विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय - इन विश्वविद्यालयों को अपनी कर्मभूमि बनाकर उन्होंने अध्यापन के जो प्रतिमान गढ़े, वे साहित्य में

गढ़े गए उनके प्रतिमानों से किसी भी रूप में उन्नीस नहीं हैं। उन्हें स्मरण करते हुए सबसे पहले वे पाठ्यक्रम याद आते हैं जिन्होंने हिंदी विभागों के पाठ्यक्रमों का चरित्र ही बदल दिया। उनका मानना था कि साहित्य के विद्यार्थियों को पुराने के साथ नया भी पढ़ना चाहिए। इसके बिना चित्त का विस्तार संभव नहीं है। जब वे जोधपुर में थे, उन्होंने राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'आधा गाँव' को पाठ्यक्रम में लगाया था। उनकी दृष्टि में वह उपन्यास विद्यार्थियों को अवश्य पढ़ना चाहिए था। विभाजन की मार्मिकता और भारतीय समाज की संश्लिष्ट बुनावट को समझने के लिए वह उपन्यास एक मार्गदर्शक की तरह है। बाद में 'आधा गाँव' को पाठ्यक्रम से हटाना पड़ा। पर नामवर जी की नयेपन को लेकर ज़िद कभी खत्म न हुई। किताबी बन चुकी शिक्षा पद्धति में उन्होंने अभिनव प्रयोग किए और वाद-विवाद के माध्यम से संवाद की परंपरा स्थापित की। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के परिवेश में शिक्षकों के पास प्रयोग के असीमित अवसर होते हैं। वह कुछ-कुछ बाबा नागार्जुन के परंपरा के आलोचक थे, जैसे नागार्जुन ने घूम-घूमकर गाँव-गिरांव में अपनी कविताओं का पाठ किया नामवर जी ने देश के दूर-दराज के इलाकों में भ्रमण कर आलोचना के माध्यम से संवाद स्थापित किया। उन्होंने आलोचक थे, जैसे नागार्जुन ने घूम-घूमकर गाँव-गिरांव में अपनी कविताओं का पाठ किया नामवर जी ने देश के दूर-दराज के इलाकों में भ्रमण कर आलोचना के माध्यम से संवाद स्थापित किया। उन्होंने मार्क्सवाद को अध्ययन-पद्धति और आलोचना के सिद्धान्त में एकसार कर दिया। उन्होंने मार्क्सवाद को अध्ययन की पद्धति के रूप में, चिंतन की पद्धति के रूप में, सामाजिक रूप से क्रांतिकारी परिवर्तन के सर्जक सिद्धान्त के रूप में और जीवन में मानवीय



सौन्दर्य-बोध को स्थापित करने वाले सिद्धान्त के रूप में अपनाया था। एक सच्चे मार्क्सवादी की भाँति उन्होंने आलोचना को स्वीकार किया और उसके आधार पर निरंतर आत्मालोचन भी किया। नामवर जी ने इस उदार और सही अर्थों में अग्रगामी परिवेश का जो उपयोग किया वह पूरे भारत के विश्वविद्यालयों के लिए आदर्श हो सकता है। उन्होंने और प्रो मुहम्मद हसन साहब ने मिलकर हिंदी और उर्दू के सम्मिलित विभाग को समावेशी बनाया। भारतीय भाषा केंद्र नाम को सार्थक करता हुआ यह केंद्र आज के कई महत्वपूर्ण बुद्धजीवियों की निर्माण स्थली बना। अब इस केंद्र में कुछ अन्य भारतीय भाषाएँ भी जुड़ गई हैं। इस केंद्र की सबसे अनोखी बात यह थी कि हिंदी के विद्यार्थियों को एक वर्ष उर्दू और उर्दू के विद्यार्थियों को एक वर्ष हिंदी पढ़ना अनिवार्य था। एक ऐसे समय में जब भारतीयता के कई पाठ मौजूद हैं, तब उनके इस कार्य का महत्व बहुत बढ़ जाता है।

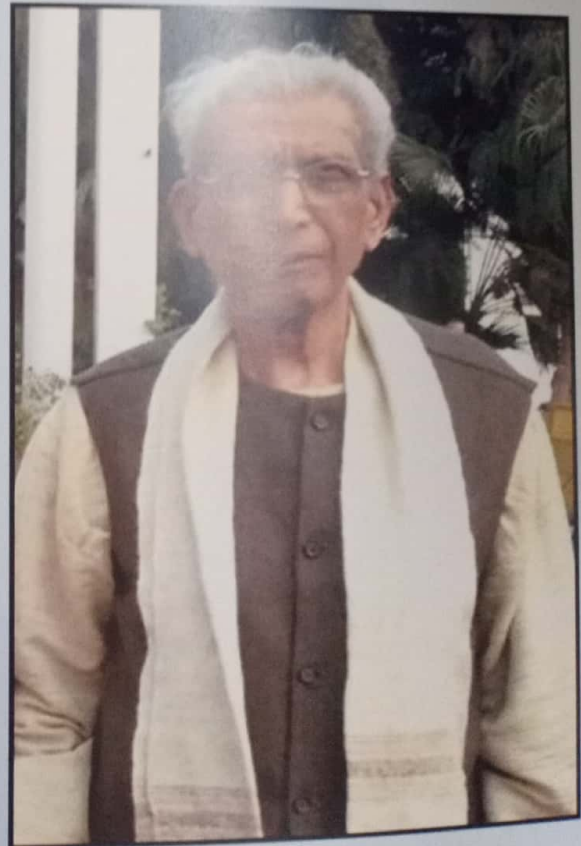
आलोचना

नामवर जी ने अपनी मेधा और तैयारी का परिचय एम.ए. के दिनों में ही दे दिया था। जिस उम्र में लोग दूसरों की किताबों के सहारे किनारा पाने की कोशिश करते हैं, उसी उम्र में नामवर जी ने सौ अंक के एक पर्चे के लिए अपभ्रंश पर जो लघु शोध-प्रबंध जमा किया, अब कई लोग उस पर स्वंत्र ग्रंथ लिख चुके हैं। परिमल के लोगों से बहस करते हुए उन्होंने जो निबंध लिखे, उनका महत्व अब भी बना हुआ है।

हिंदी में जब नई कहानी का दौर आया तो उसके सबसे विश्वसनीय आलोचक नामवर सिंह ही हुए। उन्होंने निर्मल वर्मा की कहानी 'परिदे' को नई कहानी की पहली कहानी मानते हुए उसकी जो व्याख्या की, साठ वर्ष बाद भी उसकी तार्किकता और तरलता नए से नए अध्येता को न सिर्फ आकर्षित करती है बल्कि बहुत कुछ सिखाती भी है। नई कहानी की प्रतिभाशाली तिकड़ी के सदस्य जीवन भर नामवर जी की इस स्थापना से संतप्त रहे। हाँ, विष्णु प्रभाकर के विषय में अपने लिखे पर उन्होंने अपना एक पछतावा जरूर व्यक्त किया था। दिल्ली के हिंदी भवन में विष्णु जी पर बोलते हुए वे भावुक हो गए थे। उन्होंने 'कहानी नयी कहानी' में संकलित विष्णु प्रभाकर की कहानी पर केंद्रित अपने आलेख को अतिवादी दृष्टिकोण का

परिणाम बताया था। इसी प्रकार अज्ञेय के प्रति भी उनका दृष्टिकोण बदला था। बाद के दिनों में उन्होंने अज्ञेय को निराला के बाद हिंदी का सबसे बड़ा कवि माना था। अभी पिछले दिनों नागपुर विश्वविद्यालय के एक आयोजन में अज्ञेय साहित्य के मर्मज्ञ नंदकिशोर आचार्य ने नामवर जी को याद करते हुए कहा कि अज्ञेय पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण शोधकार्य नामवर जी के निर्देशन में ही हुए हैं। महादेवी वर्मा के प्रति भी उन्होंने अपने विचारों में पर्याप्त परिवर्तन किया। हालाँकि अपनी पूर्व पुस्तकों में उन्होंने कोई परिवर्तन नहीं किया। उनकी पुस्तक 'छायावाद' ने छायावाद को देखने की सर्वथा नई दृष्टि दी। एक तरह से उन्होंने छायावाद की महान कविता को रहस्यवाद के बादलों से मुक्त किया।

और इस तरह एक लंबा और भरा-पूरा अध्यापकीय और आलोचकीय जीवन जीने के बाद नामवर जी इस संसार से विदा हुए। पर इस संसार से जाकर भी हम विद्यार्थियों के मन में वो कहीं न कहीं रह ही जाएंगे और रह जाएंगे उस दूसरी परंपरा में, जिसकी खोज उन्होंने अपने जीवन में की और उसे बड़े यत्न से स्थापित भी किया।





सोशल मीडिया में फ़ेक न्यूज का बढ़ता असर

(हिन्दी पखवाड़ा 2018 में पुरस्कृत निबंध)

राय बहादुर सिंह
व.लेखापरीक्षक



मनुष्य की अनेकों पीढ़ियाँ आपस में बहुत सी बातें कहती समझती हुई आज ऐसे युग में आ चुकी है जहाँ कुछ भी कहने लिखने के अनेको माध्यम उपलब्ध हैं। जिस गति से चीजें लिखी जा रही हैं या जो भी घटनाएँ घट रही हैं वे पहले की तुलना में अति शीघ्र लोगों तक पहुँच जा रही हैं। खबरों को जनता तक पहुँचाने का पारंपरिक माध्यम समाचार पत्र, न्यूज़ चैनल, पत्रिकाएँ इत्यादि ही रहे हैं किन्तु विगत कुछ वर्षों से एक नए माध्यम के रूप में 'सोशल मीडिया' निःसंदेह रूप से स्थापित हो चुका है। भारत जैसे देश में स्मार्टफ़ोन के बढ़ते बाजार ने इसकी पकड़ समाज पर और गहरी कर दी है मसलन फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इन्स्टाग्राम, इत्यादि किशोर उम्र के बच्चों तक की पहुँच में है और यही नई पीढ़ी सोशल मीडिया के इस नए तंत्र को बढ़ाने में सबसे आगे है।

कोई भी आविष्कार अपने साथ बहुत सारी संभावनाओं के साथ-साथ बहुत सी चुनौतियाँ एवं जिम्मेदारियाँ भी लाता है। यह मनुष्य के अपने विवेक पर निर्भर करता है कि वह उनसे कैसे निपटता है। सोशल मीडिया निःसंदेह एक क्रांतिकारी माध्यम है जिसने दुनिया को और करीब लाने और ज्ञान को सुलभ बनाने में अपूर्व योगदान दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर विभिन्न तरह की देश-दुनिया की घटनाओं को देख समझ सकता है और अपनी एक राय बना सकता है किन्तु यही सोशल मीडिया जब गलत मंशा से झूठ और विद्वेष फैलाने के लिए प्रयोग किया जाने लगे तो इसका परिणाम बहुत गंभीर और घातक साबित होने लगता है।

सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में 'फेक न्यूज' यानि झूठी खबर किस हद तक अस्वस्थता व हिंसा इत्यादि फैला सकता है, इसका संकेत हमें हाल के दिनों में कई बार देखने को मिला जब फेसबुक, व्हाट्सएप्प जैसे ऐप

के माध्यम से कथित रूप से किसी खास तरह की राजनीति से प्रेरित कोई झूठ लोगों के बीच फैलाया गया जिससे लोग भीड़ के रूप में सड़कों पर उतरे और सामाजिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाने के साथ-साथ कानून और व्यवस्था को भी हाथ में लिया। लोकतंत्र को भीड़तंत्र में बदलने का काम फेक न्यूज़ ने बड़ी निरममता व चालाकी से किया है। ऐसे में यह बहुत आवश्यक है कि व्यक्ति व सरकार के स्तर पर इस तरह की खबरों को रोकने के लिए ठोस उपाय किये जाएं।

साइबर लिटरेसी यानि साइबर साक्षरता इस कड़ी में एक महत्वपूर्ण कदम है जो लोगों को सोशल मीडिया के विवेकपूर्ण प्रयोग व सच्ची और झूठी खबरों में अंतर करने की समझ देगा। सरकारी स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन करके एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से छोटे शहरों, कस्बों व गांवों में लोगों को प्रशिक्षित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त देश में विनियामक बोर्ड का गठन भी किया जाना अपेक्षित है जो फेसबुक, व्हाट्सएप्प जैसे माध्यमों पर नियंत्रण लगा सके और देश में प्रचालन के उनके तरीके को नियमों के अधीन लाकर उनके दायित्व को स्पष्ट कर सके।

अभिभावकों को भी अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखनी होगी साथ ही साथ समय समय पर उन्हें फेक न्यूज़ जैसी चीजों से सचेत भी करते रहना होगा।

सामूहिक प्रयास से ही हम इस फेक न्यूज़ को 'फेक न्यूज़' बना सकते हैं जिसकी एक सभ्य समाज में कोई जगह नहीं होगी।

नोट: हिंदी पखवाड़ा 2018 में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना (हिंदी भाषी ... में)



सोशल मीडिया में फ़ेक न्यूज का बढ़ता असर

(हिन्दी पखवाड़ा 2018 में पुरस्कृत निबंध)

गार्गी मंडल
(व.ले.प.अ.)

सोशल मीडिया अर्थात् सामाजिक संवादों का ज़रिया। यह एक अपरम्परागत मीडिया है जो कि वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है और जिससे इंटरनेट के माध्यम से पहुँच बना सकते हैं। बच्चे, बूढ़े और जवान सभी सोशल मीडिया से अवगत ही नहीं प्रभावित भी हैं। आज के दौर में सोशल मीडिया ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है और बहुत कम प्रतिशत लोग ही होंगे जिन्होंने अपना खाता फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सऐप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट इत्यादि में नहीं खुलवाया होगा। सबसे हास्यकर और व्यंग्यपूर्ण बात यह है कि बैंक में खाता खुलवाने के लिए कम से कम एक बार अवश्य जाना होता है परन्तु सोशल मीडिया में आप घर बैठे, बस या ट्राम में सफर करते हुए अर्थात् किसी भी स्थिति में अपना अकाउन्ट खुलवा सकते हैं। इंटरनेट एक वरदान है या अभिशाप इस विषय पर चर्चा करना अब फिजूल है, क्योंकि इन्सान का दृष्टिकोण इस बात को निर्धारित करता है।

इन्टरनेट और सोशल मीडिया के संगम से हम हर तरह, हर जगह, हर चीज के विषय में आसानी से जानकारी हासिल कर सकते हैं, परन्तु चिन्ता का विषय यह कि हम जिस विषय में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं क्या वह सौ प्रतिशत सही एवं सत्य है? इन जानकारी अथवा खबरों की सत्यता का पुष्टीकरण एक साधारण इन्सान कैसे करे? जो खबरे अफ़वाह है, झूठी हैं, बनी बनाई हैं, हम उन्हें झूठा न्यूज़ कहते हैं।

इन सोशल मीडियाओं में कई खबरें तैरती रहती हैं जिनसे हमें बहुत सारी जानकारी प्रदान होती है परन्तु बहुत सी जानकारी भ्रामक एवं घातक भी होती हैं। ऐसी झूठा न्यूज़ों में जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़-मोड़ कर पेश किया जाता है जो कि अपना स्वरूप बदल कर लोगों को उकसाती है परन्तु इनका वास्तविकता से कोई

लेना देना नहीं होता। इन झूठा न्यूज़ों का कोई मालिक नहीं होता और इनके मूल स्रोत का अभाव होता है।

अभी हाल ही की बात है कि जब एयर इंडिया, जो कि एक सरकारी उद्योग है, वहाँ पर व्हाट्सऐप, इमेल एवं दूसरे सोशल मीडिया के माध्यम से कर्मचारियों को सूचित किया गया था कि यह उद्योग बन्द होने वाला है और कर्मचारीगण दूसरी नौकरी ढूँढ़ने की तैयारी करें। चौकाने वाली बात यह थी कि ऐसी खबर एयर इंडिया के पत्रशीर्ष पर छपकर आयी थी जिससे सभी को बड़ी ही आसानी से विश्वास हो गया था। कुछ समय बाद विमान सचिव एवं एयर इंडिया अध्यक्ष ने खुलासा किया कि यह एक झूठा न्यूज़ थी। इस झूठा न्यूज़ से एयर इंडिया के कर्मचारियों की रोजी-रोटी पर सवाल उठ गया था और उनकी दशा मार्मिक हो गई थी।

अमरीकी चुनाव 2016 के दौरान सोशल मीडिया कोई संदेश (Messages) पहुँचाने के लिए एक साधन के तौर पर इस्तेमाल किया जाना चाहिए। जिससे ये एक सकारात्मक भूमिका अदा करे और किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

सोशल मीडिया में झूठा न्यूज़ एक अभिशाप की तरह है और इस अभिशाप से मुक्ति पाना या इसके प्रकोप को कम करना हमारे ही हाथ में है। आज मनुष्य का विवेकबोध गायब हो चुका है, केवल शोर पैदा करने वाले या फिर भड़काने वाली खबरों का ही प्रचार कर रहे हैं। हमें उस लुप्त विवेक बोध को वापस लाना है ताकि सच और झूठ का अन्तर कर सकें। आज हर व्यक्ति सोशल मीडिया की वजह से जानकारी से भरा बैठा है अतः ये जिम्मेदारी सोशल मीडिया को इस्तेमाल करने वाले हर व्यक्ति की है



कि वे अपना दृष्टिकोण और अपना विचार किसी भी ठोस तथ्यों पर ही सच्ची खबर और झूठा न्यूज़ के बीच के नाजुक फर्क को समझ पाये। झूठा न्यूज़ बहुत ही आकर्षक होने की वजह से यह पीढ़ी इसके दुष्प्रभावों से ग्रस्त है।

आज जो लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं वे सोशल मीडिया में तैरती झूठा न्यूज़ों से अपरिचित नहीं हैं। अतः अगर आप सोशल मीडिया पर कोई भी खबर पढ़ रहे हैं तो थोड़े सावधान हो जाना चाहिए। ऐसी खबरों पर तुरंत यकीन नहीं करना चाहिए क्योंकि एक शोध में यह खुलासा हुआ है कि सोशल मीडिया में सच्ची खबरों से अधिक गलत खबरें तेजी से फैलती हैं या यूँ कह लीजिए कि झूठी खबरें जंगल में आग की तरह फैलती हैं और सच्ची खबरें पीछे छूट जाती हैं। प्राइवेटसी पूर्ण रूप से भंग तो होती ही है, साथ ही साथ फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी दंगे जैसी स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है।

सोशल मीडिया हास्य, मनोरंजन या???? बनाएं। किसी भी संदेश को आगे भेजने से पहले हर व्यक्ति अपनी बुद्धि का उपयोग करे। रोचक और मनोरंजक समाचार मिलते ही उस पर तुरन्त विश्वास ना करें और उस खबर की तह तक जाएं। हमें यह प्रण करना चाहिए कि सोशल मीडिया में हम झूठा न्यूज़ जैसे राक्षस का नाश करके सोशल मीडिया के जरिए ऐसे विकासात्मक कार्य करे जिससे लोकतंत्र की समृद्धि हो और देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता एवं समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हो।



नोट: हिंदी पखवाड़ा 2018 में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना (हिंदीतर भाषी की में)





अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय

Abridged Report	संक्षिप्त रिपोर्ट
Absentee Statement	अनुपस्थिति विवरण
Absorption	आमेलन
Abstract of Account	लेखा सार
Abuse of Power	शक्ति का दुरुपयोग
Accidental error	आकस्मिक त्रुटि
Additional Pay	अतिरिक्त वेतन
Additional Secretary	अपर सचिव
Agenda	कार्य-सूची
Anomaly	असंगति, विषमता
Arbitration Tribunal	माध्यस्थम अधिकरण
Arrears Report	बकाया कार्य रिपोर्ट
Avenues of Promotion	पदोन्नति के अवसर
Balance Sheet	तुलन-पत्र
Bilateral Agreement	द्विपक्षीय करार
Breach of Discipline	अनुशासन भंग
Break in Service	सेवा में व्यवधान
Budget Estimate	बजट अनुमान
Budget Provisions	बजट प्रावधान
Casual Labour	अनियत मजदूर/नैमित्तिक मजदूर
Chronological Order	कालक्रम
Circumstantial Evidence	पारिस्थितिक साक्ष्य
Clear Day	पूर्ण दिन
Compensatory Leave	एवजी छुट्टी/प्रतिपूरक छुट्टी
Competent Authority	सक्षम प्राधिकारी
Complainant	फरियादी/शिकायतकर्ता
Compassionate ground	अनुकंपा आधार
Consolidated fund	समेकित निधि/संचित निधि
Contingent Expenditure	आकस्मिक व्यय
Contract	संविदा/ठेका
Commuted Leave	परिणत छुट्टी/परिवर्तित छुट्टी
Covering Letter	सह पत्र
Death-cum-retirement Gratuity	मृत्यु-सह-निवृत्ति उपदान
Debit Entry	नामे प्रविष्टि
Defendant	प्रतिवादी



Delegation of Powers	शक्तियों का प्रत्यायोजन
Delivery Clerk	सुपुर्दगी लिपिक
Demotion	पदावनति
Dies-non	अकार्य दिवस
Directive	निदेश
Due Date	नियत तारीख
Ex-cadre Post	संवर्ग बाह्य पद
Errata	शुद्धि पत्र
Evaluation	मूल्यांकन
Executive Engineer	कार्यपालक इंजीनियर
Ex-officio Chairman	पदेन अध्यक्ष
Explosive	विस्फोटक
Extent	विस्तार (सीमा)
Fabrication of charges	आरोप गढ़ना
Forged Document	जाली/नकली दस्तावेज
Habitual Defaulter	चूक करने का आदी
Held in abeyance	मुलतवी रखा जाए/आस्थगित रखा जाए
Imposition	अधिरोपण
In any case	हर हाल में
In camera meeting	गुप्त बैठक
Informal discussion	अनौपचारिक विचार-विमर्श
Initial Pay	प्रारंभिक वेतन
Leave preparatory to retirement	सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी
Licence	लाइसेंस
Local Body	स्थानीय निकाय
Material Evidence	तात्त्विक साक्ष्य
Misappropriation of money	धन-दुर्विनियोग
Misconduct	कदाचार
Mobilisation of resources	संसाधन जुटाना
Monetary crisis	मुद्रा-संकट
Non-statutory	असांविधिक
Oath of allegiance	निष्ठा की शपथ
Parent Office	मूल कार्यालय
Part and Parcel	अभिन्न अंग (हिस्सा)
Phased Programme	चरणबद्ध कार्यक्रम
Physical verification of Stock	स्टॉक का प्रत्यक्ष सत्यापन
Power of attorney	मुख्तारनामा



Preventive measure
Prima-facie evidence
Probation period
Proficiency
Proforma Promotion
Pros and Cons
Public Address
Public convenience
Public Grievance
Public Undertaking
Quarantine Leave
Re-appropriation of funds
Reconciliation of accounts
Recurring Expenditure
Refresher Course
Relinquishment of charge
Remedial measure
Repatriation of service
Requisite information
Restricted Leave
Revised Statement
Salient features
Selection Post
Standing Committee
Starred Question
Statute
Statutory Obligation
Statutory requirement
Stop gap arrangement
Sub-judice
Supplementary question
Sample check
Time bound Programme
Train collision
Transitional period
Ultimatum

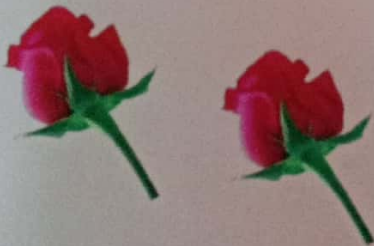
निवारक उपाय
प्रथम दृष्टया साक्ष्य
परिवीक्षा अवधि
प्रवीणता
प्रोफॉर्मा पदोन्नति
पक्ष-विपक्ष
जन संबोधन
जन सुविधा
जन शिकायत
सार्वजनिक उपक्रम
संगरोध छुट्टी
निधियों का पुनर्विनियोजन
लेखा-समाधान
आवर्ती व्यय
पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
कार्यभार त्याग
उपचारी उपाय
सेवाओं का प्रत्यावर्तन
अपेक्षित सूचना
प्रतिबंधित अवकाश/छुट्टी
परिशोधित विवरण
प्रमुख विशेषताएं
प्रवरण पद, चयन पद
स्थायी समिति
तारांकित प्रश्न
संविधि
सांविधिक बाध्यता/कानूनी दायित्व
सांविधिक अपेक्षा
कामचलाऊ व्यवस्था
न्यायाधीन
अनुपूरक प्रश्न
नमूना जाँच
समयबद्ध कार्यक्रम
रेल-भिड़ंत/टक्कर
संक्रमण काल
अंतिम चेतावनी



Unavoidable delay
Unconstitutional
Under Certificate of Posting
Unforeseen circumstances
Unilateral action
Uninterrupted Service
Voluntary retirement
Vote on account
Ways and means committee
Working Day
Work Permit
Works
Write off
Writ Petition
Yardstick
Year to Year
Zonal

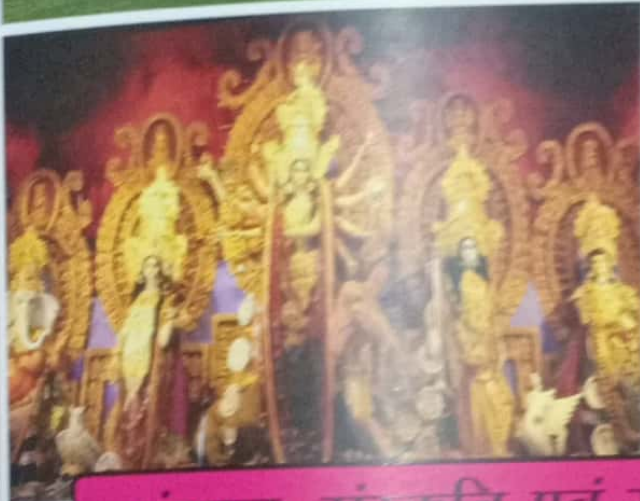
अपरिहार्य विलंब (देरी)
असांविधिक
डाक प्रमाणित
अप्रत्याशित परिस्थितियां
एकपक्षीय/इकतरफा कार्रवाई
अविच्छिन्न सेवा, अविरत सेवा
स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति
लेखानुदान
अर्थोपाय समिति
कार्य दिवस
कार्यानुमति पत्र
निर्माण कार्य
बट्टेखाते में डालना
रिट याचिका
मानदंड
वर्षानुवर्ष
क्षेत्रीय, आंचलिक, जोनल

प्रेम का घाव बड़ी ही दुर्लभ वस्तु है। जिसने इसे पा लिया उसे और कुछ पाने की इच्छा नहीं रह जाती। हृदय में बिंधा हुआ कौटा जब कसक उत्पन्न करता है, तब उस सुख के सामने स्वर्ग और मुक्ति, सभी कुछ नीरस हो जाते हैं। प्रेम का जीवन विरह में है। मिलन की राह देखते हुए आराध्य के ध्यान में समय बिताना, प्रेमी के लिए इससे अधिक प्यारा और कोई कार्य नहीं। - डॉ. रामधारी सिंह "दिनकर"

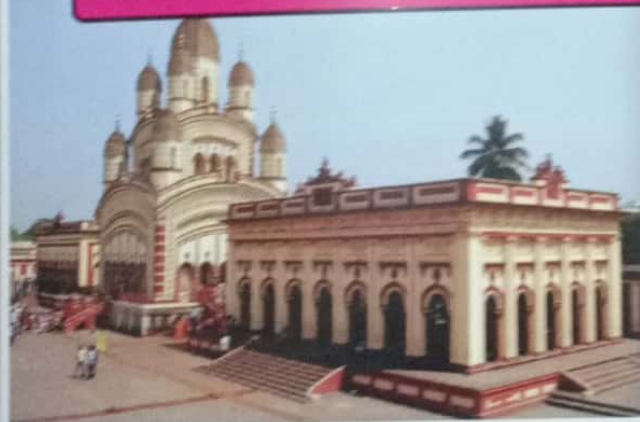
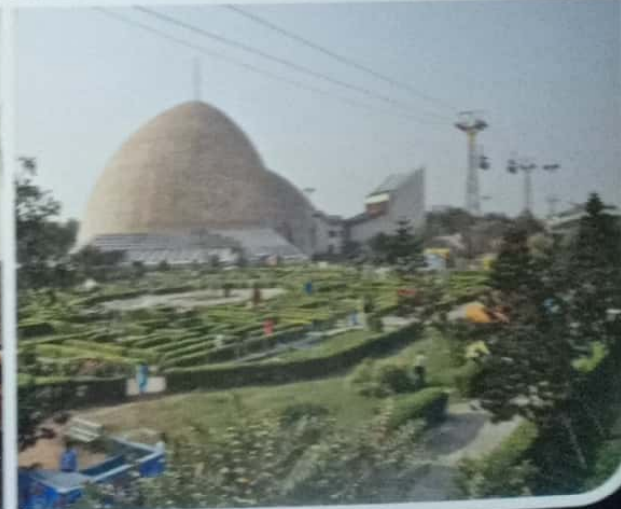


जो भावना मुखरित नहीं हुई, जो अनुभूति के स्तर पर केवल मन ही मन, अन्दर ही अन्दर रचती रही जिस रागिनी को किसी ने न तो सुना, न गाया-वह अपने शुद्ध रूप में परा के स्तर पर कितनी महान होती है उसकी अनुगूँज कितनी मधुर होती है-इसे केवल विरह विदग्ध ही जानता है। - डॉ. विद्यनिवास मिश्र

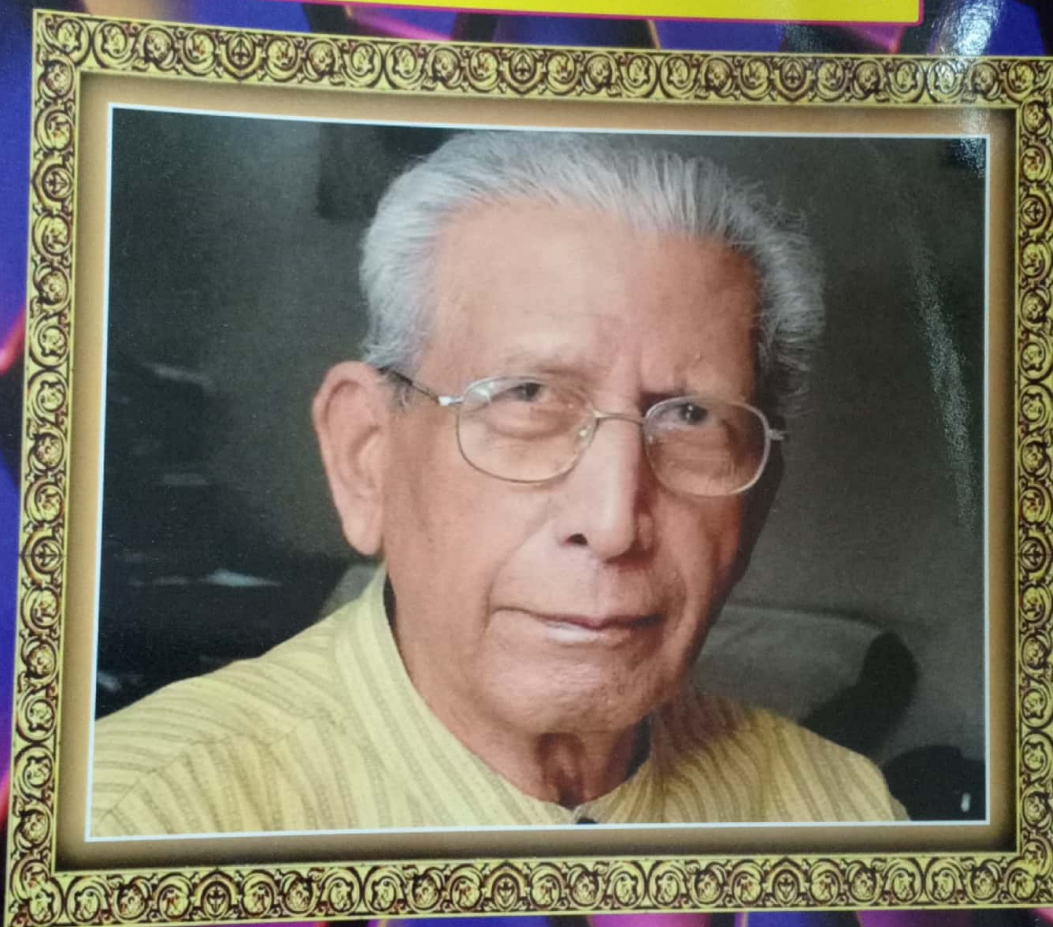
"पिपासा तृप्त होने की चीज नहीं है। आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती, उसे घृत की आवश्यकता होती है जिससे वह और भड़के।"
- भगवती चरण वर्मा



बंगाल: संस्कृति एवं स्थापत्य के झरोखे से



नामवर सिंह (01.05.1927 से 19.02.2019)



Designed & Printed at M/s.AMIT OFFSET,
7, Waterloo Street, Kolkata- 700069 Mob:9339764686